Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

बालस्स मंदयं बीयं, जं च कडं अवजाणई भुज्जो।

मूढ़ की यह दूसरी मंदता है कि वह किए हुए पाप को नकारता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 11 • 19 - 25 दिसंबर, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 17-12-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

सिरियारी की पावन भूमि में जैन भगवती दीक्षा समारोह का भव्य आयोजन

वह जीवन धन्य हो जाता है जिसमें व्यक्ति को चारित्र और संयम प्राप्त होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सिरियारी, ८ दिसंबर, २०२२

सिरियारी में दूसरे दिन का पूज्यप्रवर का पावन प्रवास और दीक्षा समारोह का आयोजन। आज सात मुमुक्षु तेरापंथ की जैन भगवती दीक्षा पूज्यप्रवर से ग्रहण करने जा रहे हैं। मुनि हेमराज जी की दीक्षा स्थली भी सिरियारी है।

संयम प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा समुच्चारित नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। धीर-गंभीर, संत शिरोमणी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने महावीर स्तुति करते हुए फरमाया कि हमारी आत्मा बहुत बड़ी यायावर है। आत्मा से बड़ा यायावर कौन है? हमारी आत्मा ने अनंत-अनंत जन्म-मरण कर लिए हैं। वह जीवन धन्य है जब जीव को सम्यक्त्व व संयम प्राप्त हो जाता है।

संसार में बहुत से रत्न हीरे हैं पर सम्यक्त्व रत्न से बड़ा कोई रत्न नहीं है। सम्यक्त्व से बड़ा कोई मित्र, बंधु या लाभ नहीं होता। सम्यक्त्व है, तो फिर संयम बड़ा होता है। चारित्र के बिना सम्यक्त्व हो सकता है, पर सम्यक्त्व के बिना चारित्र की उपलब्धि नहीं हो सकती।

वह जीवन धन्य है, जहाँ चारित्र और संयम प्राप्त होता है। सम्यक्त्व तो इस जीवन के बाद साथ जा सकता है, पर चारित्र नहीं जाता। क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त हो गया है, तो वह स्थायी हो जाता है। मोक्ष का रास्ता प्राप्त हो जाता है।

यह सिरियारी का भिक्षु समाधि स्थल संस्थान हमारे धर्मसंघ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य भिक्षु की तपोभूमि है। हमारे आद्य-प्रवर्तक से जुड़ा स्थान है। वो नागराज या यक्षराज केलवा में आचार्य भिक्षु से आकर्षित हुए थे। आचार्य भिक्षु में कैसी आराधना, साधना, ज्ञान और बौद्धिक क्षमता रही होगी। आचार्य भिक्षु संघर्ष में भी हर्ष में रहे, यह महापुरुष का एक लक्षण माना जा सकता है।

अच्छे शिष्यों का मिलना भी आचार्य का भाग्य होता है। आचार्य भिक्षु को कई अच्छे-अच्छे शिष्य मिले थे। मुनि हेमराज जी जैसे शिष्य उन्हें मिले थे। एकमात्र मुनि हेमराज जी की दीक्षा द्विशताब्दी आचार्यों द्वारा मनाई गई थी। वे शासन के महास्तंभ थे। जयाचार्य तो उन्हें अपना विद्या गुरु मानते थे।

आचार्य भिक्षु को भारीमालजी जैसे उत्तराधिकारी व खेतसी-टोकरजी जैसे विनीत संत मिले थे। आज दीक्षा समारोह यहाँ आयोजित हो रहा है। मुमुक्षु यह अनुप्रेक्षा करें कि जितनी दीक्षाएँ हो रही हैं, उतनी वापस नई मुमुक्षु बनें।

पूज्यप्रवर ने अभिभावकों से लिखित व मौखिक आज्ञा ली। यह वीड़ियो रिकॉर्डिंग भी बड़ा प्रमाण होता है। मुमुक्षुओं की भी मौखिक आज्ञा ली।

णमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स का स्मरण करते हुए परम पावन ने आचार्य भिक्षु व उनकी उत्तरवर्ती परंपरा का स्मरण करते हुए गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का स्मरण किया। रत्नाधिक साधुओं को वंदन किया। तत्पश्चात् नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर अर्हत वाणी का उच्चारण करते हुए पूज्यप्रवर ने सातों मुमुक्षु भाई-बहनों को सामायिक पाठ के उच्चारण से आजीवन तीन करण तीन योग से सावद्य योग का त्याग करवाया। अब ये साधु-साध्वी संघ से जुड़ गए हैं। नव दीक्षितों ने तीन बार प्रदक्षिणा कर गुरु वंदना की।

पूज्यप्रवर ने नव दीक्षितों को इर्यापथिक सूत्र के उच्चारण से अतीत की आलोचना करवाई। पूज्यप्रवर ने नव दीक्षित साधुओं का केश लुंचन संस्कार करते हुए समझाया कि अब इनकी चोटी गुरु के हाथ में आ गई है। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने नव दीक्षित साध्वियों का केश लोच का संस्कार संपन्न किया।

पूज्यप्रवर ने अर्हत वाणी के साथ आशीर्वाद फरमाते हुए नव दीक्षित साधुओं को अहिंसा की साधना में सहयोगी रजोहरण प्रदान करवाया। नव दीक्षित साध्वियों को साध्वीप्रमुखाश्री जी ने रजोहरण प्रदान करवाया।

पूज्ययप्रवर ने नामकरण संस्कार संपन्न कराते हुए मुमुक्षु शुभम का नया नाम मुनि चिन्मय प्रदान कराते हुए मुनि दिनेश कुमार जी को सौंपा। मुमुक्षु मुदित का नया नाम मुनि मेधावी कुमार रखते हुए मुनि मनन कुमार जी को सुपुर्द किया। मुमुक्षु दक्ष का नया नाम मुनि देवकुमार रखते हुए मुनि कीर्तिकुमार जी को सुपुर्द किया।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 दिसंबर, 2022

✦ दूसरों पर अनुशासन करने वाला पहले स्वयं पर अनुशासन करे तो व्यवस्था सम्यक् हो सकती है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

राजा अपने देश में पूजा जाता है, परंतु विद्वान् सर्वत्र पूजनीय होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

राणावास, १० दिसंबर, २०२२

सिरियारी का त्रिदिवसीय प्रवास पूरा कर शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी राणावास पधारे। पूज्यप्रवर ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। अध्यात्म विद्या का अपना ज्ञान है, तो लौकिक विद्याओं का भी अपना ज्ञान होता है। शिक्षा के प्रति लोगों का रूझान है, तो सरकार भी विद्या-संस्थानों पर ध्यान देती है।

शास्त्रकार ने विद्या-प्राप्ति के पाँच बाधक तत्त्व बताए हैं। उनमें पहला कारण बताया—अहंकार। विद्यार्थी में ज्ञान और ज्ञानदाता के प्रति विनय होना चाहिए। ज्ञान के प्रति आकर्षण हो।

दूसरी बाधा—आक्रोश की वृत्ति। विद्यार्थी शांत प्रवृत्ति का हो। तीसरी बाधा है—प्रमाद है, विकथा करता है, नींद ज्यादा लेता है, नशा करता है, तो प्रमाद भी बाधक है। चौथी बाधा है—रोग। शरीर में रोग है या मन में रोग है, तो बीमार आदमी कितना पढ़ पाएगा। ज्ञान प्राप्ति के लिए शरीर और मन का स्वास्थ्य भी चाहिए। पाँचवाँ बाधक तत्त्व बताया गया—आलस्य। यह बड़ा शत्रु है जो उसके मन में रहता है। आदमी पुरुषार्थ करे।

रत्न आदमी को खोजने के लिए नहीं निकलता। आदमी को रत्न की खोज करनी होती है। खोज करने पर रत्न मिल सकता है। श्रम के समान कोई बंधु नहीं है। पुरुषार्थ करने वाला अवसाद को प्राप्त नहीं होता है। इन पाँच बाधक तत्त्वों से विद्यार्थी बचने का प्रयास करे तो वह विद्यावान बन सकता है। विद्या धन है।

राजा अपने देश में पूजा जाता है, पर विद्वान् सर्वत्र पूजा जाता है। विद्या-विहीन है, तो जिंदगी में बहुत कमी है। लौकिक शिक्षा के साथ अध्यात्म ज्ञान को प्राप्त कर आदमी राग से वैराग्य की ओर आगे बढ़े। श्रेयों में अनुरक्त हो जाए। चित्त मैत्री भाव से भावित हो जाए। वह ज्ञान जिन शासन में है।

विद्या परिश्रम को माँगती है, यह एक प्रसंग से समझाया कि विद्यार्थी अंक पाने के लिए ही न पढ़े, ज्ञान भी अर्जित करे। आज हम लोग राणावास आए हैं। राणावास तो विद्या-भूमि है। विद्या के साथ नैतिकता, अहिंसा, जीवन-विज्ञान भी जुड़ा रहे। अच्छे संस्कार विद्यार्थियों में परिणत होते जाएँ। संस्कारयुक्त शिक्षा दी जाए।

आचार्यश्री के स्वागत में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लुंकड़, मुंबई क्षेत्र के सांसद संजीव नाईक, श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी मानव हितकारी संघ के अध्यक्ष संपतमल भंडारी, मंत्री रतनचंद सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याओं ने स्वागत गीत का संगान किया। कांठा महिला शिक्षण संघ द्वारा आचार्यश्री के श्रीचरणों में अभिनंदन पत्र अर्पित किया गया। क्षेत्रीय विधायक सुखवीर सिंह जोजावर ने कहा कि आज मेरा अहोभाग्य है कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का मंगल पदार्पण हुआ है। मैं क्षेत्र की समस्त जनता की ओर से आपका हार्दिक स्वागत-अभिनंदन करता हूँ। मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री प्रवास स्थल की ओर पधारे और कुछ मात्र दो घंटों से भी कम ठहराव के बाद पुनः सांध्यकालीन विहार के लिए गतिमान हुए। आचार्यश्री लगभग पाँच किलोमीटर का विहार कर गादाणा में पधारे तो स्वागतोत्सुक गादाणावासियों ने अपने आराध्य का भावभीना अभिनंदन किया। गादाणा गाँव भी मानो महामानव के आगमन मात्र से ही आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत नजर आ रहा था। स्वागत में उपस्थित श्रद्धालुओं के बुलंद जयघोष व भव्य जुलूस के रूप में उपस्थित जनता को अपने आशीष से आच्छादित करते गाँव के मध्य स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में पधारे। जहाँ आचार्यश्री का रात्रिकालीन प्रवास हुआ।

अध्यात्म की साधना का प्रमुख लक्ष्य हो मोक्ष प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

मारवाड़ जंक्शन, ११ दिसंबर, २०२२

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः १३ किलोमीटर का विहार कर राणावास से मारवाड़ जंक्शन पधारे। मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि धार्मिक साहित्य में मोक्ष की बात आती है। सर्वकर्मों से युक्त हो जाना और शाश्वत सुखों को प्राप्त कर लेना, लोक के ऊपरी भाग में आत्मा का स्थित हो जाना यह मोक्ष की बात है।

अध्यात्म की साधना का प्रमुख लक्ष्य मोक्ष ही होना चाहिए। हमारी आत्मा अनंत काल से जन्म-मरण करती आ रही है। इस जन्म-मरण की शृंखला का विच्छेद हो जाना-बंध हो जाना तभी संभव है, जब आत्मा मोक्ष को प्राप्त हो जाती है। इस बात के प्रवक्ता तीर्थंकर होते हैं। कितने-कितने भव्य जीव सन्मार्ग पर स्थित हो जाते हैं।

तीर्थंकर अध्यात्म के अधिकृत प्रवक्ता होते हैं। जैन शासन में सृष्टि में बीस तीर्थंकर तो हमेशा विद्यमान रहते हैं। ज्यादा से ज्यादा १७० तीर्थंकर एक साथ हो सकते हैं। वर्तमान में यहाँ तीर्थंकर तो उपलब्ध नहीं है। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। आचार्य आगम के वेत्ता होते हैं। आगमों में जो तत्त्व है, उसको नवनीत के रूप में उपाध्याय-आचार्य आदि परोस सकते हैं।

जो चंड है, आक्रोधशील है, ऐसे आदमी को मोक्ष नहीं मिलता है। गुस्सा भी एक कमजोरी है। आदमी क्षमाशील बने। जिसके पास क्षमा की तलवार है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ेगा? क्षमा वीरस्य भूषणं। सक्षमता होने पर भी क्षमा को रखना बड़ी बात होती है। जैन शासन में पर्युषण क्षमा का पर्व है। जो जागृत है, वो वीर हो जाता है। प्रभु महावीर ने कितना क्षमा का भाव रखा था।

जिसके मन में अहिंसा प्रतिष्ठित हो जाती है, उसके पास आने वाला व्यक्ति भी बैर-भाव से मुक्त बन सकता है। हमारे जीवन में क्षमा का भाव रहे। उपशम से गुस्से को परास्त करने का प्रयास करें। मानव जीवन दुर्लभ है। इस जीवन में हम धर्म की आराधना-साधना करें। हम अच्छी साधना करते हुए मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ें, यह काम्य है।

आज मारवाड़ जंक्शन आए हैं। जिनेंद्र-अर्हत का जाप करते रहें। जैन-अजैन सभी में धर्म की भावना रहे। यहाँ से हमारे धर्मसंघ में साध्वियाँ भी हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गुरु को हम कल्पवृक्ष के रूप में देख रहे हैं। गुरु के पास जो मनोकामना लेकर जाता है, वो पूरी हो जाती है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना-स्वागत में गणपत मरलेचा, सकल संघ गीत से पारसमल भंडारी (जिनेंद्र विहार से), तेममं, हरखचंद पोरवाल, साध्वी अनंतप्रभा जी, साध्वी लक्ष्यप्रभा जी, प्रकाश भंडारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

प्रकाश भंडारी ने अपनी मातुश्री उकी देवी भंडारी की स्मृति में पुस्तक 'मातृ-छाया' पूज्यप्रवर को अर्पित की।

पूज्यप्रवर ने महाश्रमण एक्सप्रेस में उल्लेखित त्याग के संकल्प करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

वह जीवन धन्य हो जाता है जिसमें व्यक्ति...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुमुक्षु सोनल का नाम साध्वी स्तुतिप्रभा, मुमुक्षु खुशबू का नाम साध्वी क्षितिप्रभा, मुमुक्षु मनीषा का नया नाम साध्वी मानसप्रभा एवं मुमुक्षु तुलसी का नाम साध्वी तेजसप्रभा रखा। सभी नवदीक्षितों को पूज्यप्रवर ने शिक्षाएँ प्रेरणा प्रदान करवाई। श्रावक समाज ने नवदीक्षितों को प्रथम वंदना की।

कार्यक्रम से पूर्व सभी मुमुक्षुओं ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। पारमार्थिक शिक्षण संस्था के कोषाध्यक्ष जसराज बुरड़ ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। मुमुक्षुओं के अभिभावकों ने लिखित आज्ञा पत्र पूज्यप्रवर को समर्पित किए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि जो व्यक्ति चलता है, वह अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। पराक्रम करने वाला सफल होता है। पुरुषार्थ भी सही दिशा में होना चाहिए। तप संयम में पराक्रम करने वाला लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। दीक्षा लेने वाला मंजिल तक पहुँचने का प्रयास करता है। गुरु मार्ग दिखाने वाले होते हैं। हर व्यक्ति दीक्षा के कठोर जीवन को स्वीकार नहीं कर सकता। चारित्र मोहनीय कर्म का विलय होने पर ही दीक्षा प्राप्त कर सकता है। दीक्षा ग्रहण करने के कई निमित्त बन सकते हैं। दीक्षा लेने के पश्चात व्यक्ति निश्चिंत हो जाता है। सारी चिंताएँ गुरु चरणों में समर्पित हो जाती हैं।

भीलवाड़ा तेयुप ने भिक्षु पंचांग का अनावरण किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

लंदन फेथ एंड बिलीफ कम्युनिटी द्वारा जैविभा, लंदन को किया सम्मानित

लंदन।

वेस्टमिंस्टर एब्बे में लंदन फेथ एंड बिलीफ कम्युनिटी द्वारा लंदन के विशिष्ट समाजसेवी संस्थाओं, व्यक्तियों को उनके प्रेरणादायक कार्यों के लिए पुरस्कृत किया गया।

कोविड़-१६ के समय में पर्यावरणीय स्थिरता से लेकर सामाजिक, धार्मिक, व्यक्तित्व विकास के लिए विभिन्न ३८ श्रेणियों में ३०० संस्थाओं, लोगों को पुरस्कार दिए गए।

जैन विश्व भारती, लंदन को भी समणी जी द्वारा दिए आध्यात्मिक परामर्श और जैन तेरापंथ श्रावक समाज की स्वास्थ्य सेवाओं, भोजन वितरण के आधार पर सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार ग्रेटर लंदन काउंसिल ऑफ फेथ के लॉर्ड लेफ्टिनेंट, सर केनेथ ओलिसा ओबीई ने दिया। इस अवसर पर समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी, समणी पुण्यप्रज्ञा जी भी उपस्थित रहे।

इस तरह का आयोजन पहली बार वेस्टमिंस्टर एब्बे में आयोजित किया गया। इस समारोह में पूरे लंदन के लोग साथ आए, जो अपने समुदायों में सद्भावना और समावेश के लिए काम करते हैं। ३८ परियोजनाओं के अलावा, प्रेरक व्यक्तियों की उपलब्धियों को मान्यता दी गई और ६० अन्य परियोजनाओं के महान कार्यों पर प्रकाश डाला गया।

फेथ एंड बिलीफ फोरम के निदेशक मिल चम्पैन ने कहा कि आस्था और विश्वास समूह लंदन में सामुदायिक जीवन के केंद्र में हैं, जो जरूरतमंद लोगों को महत्त्वपूर्ण सेवाएँ और सहायता प्रदान करते हैं और उनके सदस्यों एवं लाभार्थियों से संबंधित एक मजबूत भावना है।

ग्रेटर लंदन के एच०एम० लॉर्ड-लेफ्टिनेंट सर केनेथ ओलिसा ओबीई ने कहा कि यह आयोजन उन लोगों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित है जो अपने कार्यों और सिद्धांतों के माध्यम से लंदनवासियों को अपनेपन की भावना बढ़ाने में मदद करते हैं। इसके केंद्र में विश्वास है। जो हममें से बहुतों को हमारी पहचान और कर्तव्य का बोध कराता है। ये ऐसी योजना है जिन्हें आगे बढ़ाने की आवश्यकता है और लंदन फेथ एंड बिलीफ कम्युनिटी अवार्ड्स का समर्थन करके मुझे भी खुशी हो रही है।

दो धाराओं का मधुर मिलन

कोटकपुरा।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी 'स्वामी' से मिलने के लिए ज्ञानगच्छ के प्रकाश मुनि जी के शिष्य विजय मुनि जी ठाणा-दो का तेरापंथ भवन में अकस्मात आना हुआ। उन्होंने कहा कि हम २०१४ में आचार्यश्री महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा के साथ रामा कालावाली के रास्ते में मिले थे, तब से आपके दर्शनों की भावना थी। आज जेतों से चले तब आपके विषय में जानकारी मिली हम दो दिन जैतों भवन में ही रुके थे, अब फरीदकोट जा रहे हैं। लगभग आधा घंटा विविध विषयों पर वार्ता हुई।

दोनों संत मंगलपाठ का श्रवण कर प्रस्थान कर गए। मुनि कमल कुमार जी 'स्वामी' संतों के प्रस्थान के समय मुख्य द्वार तक पधारे। इस प्रकार के मधुर मिलन से संघ प्रभावना होती है। विजय मुनि जी भी नोखा मंडी के हैं और मुनि कमल कुमार जी 'स्वामी' भी गंगाशहर के हैं। दोनों में ही थली प्रांत के होने से काफी आत्मीय भाव देखने को मिला।

बुद्धि और साहस से होता जीवन में विकास

कांटाबाजी।

मुनि प्रशांत कुमार जी ने मुस्कान इंटरनेशनल स्कूल में बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में सफल होने के लिए कुछ करना होता है। बच्चे कोरे कागज की तरह होते हैं, उन्हें जिस माहौल, परिवेश में डाला जाता है, वे वैसे बन जाते हैं। बच्चे हमारे देश, समाज के भविष्य बनते हैं, इन्हें प्रारंभ से ही सुसंस्कारी बनाया जाए।

विद्यालय में विद्यार्थी ज्ञान अर्जन के साथ जीवन निर्माण के तरीके भी सीखें। जीवन में आने वाली परिस्थितियों का सामना कैसे करें, कैसे हम अच्छे नागरिक बनें, किस प्रकार हमारे चरित्र का निर्माण हो, अपने आवेश एवं आवेग पर नियंत्रण कैसे रखें, ये ज्ञान भी बच्चों को देना जरूरी है।

मुस्कान इंटरनेशनल स्कूल से प्राप्त शिक्षा से आपका जीवन आदर्श एवं प्रेरक बने। स्कूल के नाम की तरह आपके कार्यों की मुस्कान औरों के जीवन को महकाती रहे। विद्यालय के विद्यार्थियों में स्वागत गीत के द्वारा मुनिद्वय का अभिनंदन किया। कौशल्या देवी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। विद्यालय के संस्थापक ब्रजेश मित्तल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

भावी पीढ़ी स्कूली शिक्षा के साथ चारित्रशील, संस्कारी बने

शिशोदा गाँव।

साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में राजकीय उच्च विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। स्कूल में लगभग ७०० बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। साध्वीश्री जी ने सभी बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान युग शिक्षा का युग है, कम्प्यूटर, लेपटॉप, मोबाइल का युग है, जिनके माध्यम से अनेक विषयों का ज्ञान किया जा रहा है। शिक्षा जीवन विकास के लिए बहुत आवश्यक है।

साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि शिक्षा के साथ अच्छे संस्कारों का होना भी बहुत आवश्यक है। संस्कारों के अभाव में जीवन अधूरा रह जाता है। वर्तमान युग में शिक्षा तो बहुत विकासशील है किंतु गहराई से देखा जाए तो विनम्रता, शालीनता, अनुशासनबद्धता, व्यवहारकुशलता, चारित्रशीलता आदि सद्गुणों का अभाव सा होता जा रहा है। शिक्षा के साथ सत्यता, प्रामाणिकता, व्यवहारशीलता आदि गुणों को जागृत करना है तो व्यक्ति अपने जीवन का सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास कर सकता है।

हर विद्यार्थी चारित्रशील, विनयशील, व्यवहारशील, अनुशासनशील बनने का दृढ़-संकल्प करे। साध्वीश्री जी ने एक गीत का संगान किया।

इस अवसर पर स्कूल के प्रिंसिपल हीरालाल ने साध्वीश्री जी के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि आज हमारा सौभाग्य है कि हमारे स्कूल प्रांगण में आप पधारे। मैं पूरे अध्यापक वर्ग के प्रति भी हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूँ। ये ही बच्चों के जीवन निर्माता हैं। अच्छी शिक्षामृत के द्वारा अच्छे भविष्य का निर्माण करते हैं। पूरे अध्यापक वर्ग ने भी साध्वीवृंद के प्रति आभार ज्ञापित किया।

मदन तलेसरा ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री जी ने बच्चों को कुछ संकल्प करवाए। साध्वीश्री जी ने जीवन-विज्ञान के बच्चों को स्मृति विकास, बुद्धि विकास एवं भावनात्मक विकास के भी विधिपूर्वक प्रयोग करवाए। मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दोहे

मुनि अनिकेत कुमार जी के प्रति

● **मुनि कमल कुमार** ●

भैक्षव शासन में हुए श्रमणी श्रमण अनेक
जिनकी महिमा श्रवणकर मन प्रसन्न अतिरेक।।

मुनि अनिकेत कुमार जी सेवाभावी संत
धन्य स्वयं को मानते पाकर तेरापंथ।।

महाश्रमण गुरु की कृपा देखी अपरंपार
चेन्नई में चारित्र ले तरा सकल परिवार।।

मुनि रणजीत कुमार का मिला सुखद सहयोग
तप जप व स्वाध्याय का चलता सतत प्रयोग।।

पिता श्रमण की मिल गई कौशल मुनि को सेव
करते हैं हितकर सदा महाश्रमण गुरुदेव।।

पाँचों ही दीक्षित हुए बना नव्य इतिहास
एक स्थान जमकर रहे जब तक श्वासोश्वास।।

धन्य हुए अनिकेत जी धन्य संघ परिवार
सुयश कमाकर के गए मुख मुख जय जयकार।।

करते मंगलकामना शीघ्र वरें भव थाह
कमल अमन नमि हृदय की यही एक है चाह।।

तुलसी भजन संध्या का आयोजन

दिल्ली।

गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की मासिक तिथि पर साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में वीर अपार्टमेंट, रोहिणी में भजन संध्या का आयोजन किया गया। डॉ० साध्वी कुंदनरेखा जी तथा साध्वी सौभाग्ययशा जी ने भक्ति रस से भरपूर गीतिकाओं का संगान किया।

इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित गायकों ने भी ऐसा समा बांधा कि श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो गए। सुरेंद्र नाहटा, हिम्मत राखेचा, प्रवीण बैद, बिमला डागा, रतन लाल जैन, सुरेश बरमेचा एवं मुकेश जैन ने अपनी प्रस्तुति दी।

श्रोतागण भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। अंत में साध्वी कुंदनरेखा जी ने गुरुदेव तुलसी के बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

भारत की भूमि ऋषि-मुनियों के संस्कार से सिंचित

पारलापल्लि।

मंडल परिषद् राजकीय प्राथमिक विद्यालय, पारलापल्लि में कार्यक्रम में मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि भारत सत्-संस्कारों से सिंचित भूमि है और उसको संवर्द्धित करने में ऋषि-मुनियों का बहुत बड़ा योगदान है। ऋषि-मुनि अपनी साधना-आराधना के साथ जनता के आध्यात्मिक उत्थान और सामाजिक कल्याण में सहभागी बनें, बन रहे हैं। व्यक्तिगत उन्नति व पारिवारिक, सामाजिक समरसता को बनाए रखा।

मुनिश्री ने आगे कहा कि भारतीय प्रशासनिक अधिकारी, तमिलनाडु राज्यपाल के मुख्य सचिव ये भी जनता की सेवा करने वाले होते हैं। पाटिल एक विनम्र व्यक्तित्व के धनी हैं एवं समय-समय पर साधु-संतों की सेवा करते रहते हैं। आपका पूरा परिवार भी साधु-संतों के प्रति नम्र है।

इस अवसर पर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, संतोष परमार, सुरेश रांका, प्रवीण सुराणा, महावीर कोठारी, स्वरूपचंद दांती, अरुण परमार, दीपक जैन, अशोक लोढ़ा, कोयंबटूर से नेमचंद बुच्चा आदि अनेकों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

✦ *तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में, साध्वी त्रिशला कुमारी जी की प्रेरणा से कार्यशाला आयोजित की गई। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गिडिया ने सभी बहनों का एवं मुख्य वक्ता सुनीता मूथा, नमिता सिंघी का स्वागत किया। यदि व्यक्ति सकारात्मक सोच से रहे तो वह अपना जीवन सुखी, स्वस्थ बना सकता है।

मुख्य वक्ता सुनीता ने बताया कि जैन धर्म में बहुत पॉजिटिविटी है। महावीर स्वामी को ये भी पता नहीं था कि मैं तपस्या करूँगा तो क्या-क्या कठिनाइयाँ आएँगी। प्रॉब्लम आती है जो वो खुद की समझ पर है। लेकिन अगर हम पोजिटिव सोच से चलेंगे तो जीवन आसान हो जाएगा।

सकारात्मक सोच की दूसरी वक्ता नमिता ने बताया कि जितने भी सफल व्यक्ति हुए हैं उन सभी में एक बात आम देखी गई, और वो है पॉजिटिव नजरिया। तो हम भी यही सोच को अपनाकर, अपने जीवन को ऊँचाइयों तक ले जा सकते हैं।

सकारात्मक सोच वाले कि संगति से भी हमारे जीवन में बदलाव आता है। उन्होंने बहनों को कुछ रोचक गेम भी खिलाए। दोनों मुख्य वक्ताओं का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व मंत्री अल्पना दुगड़ ने किया। संयोजिका रूबी दुगड़ का सहयोग रहा। आभार उपाध्यक्ष शकुंतला बुच्चा द्वारा किया गया।

चेम्बूर (मुंबई)।

तेममं के तत्त्वावधान में 'द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। चेम्बूर महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। संयोजिका तारा आच्छा ने सभी का स्वागत-अभिनंदन किया।

महिला मंडल, चेम्बूर द्वारा सकारात्मक सोच में हमेशा कैसे रहें? इस पर लघु नाटिका की प्रस्तुति दी।

लाइफ डिजाइनर शीतल सांखला ने सकारात्मक सोच को कैसे बढ़ाया जाए? हमारे जीवन को हम कैसे सकारात्मक सोच द्वारा अच्छा बना सकते हैं। इसकी पूरी जानकारी दी।

शीतल ने चार एक्टिविटी द्वारा नकारात्मक सोच को कैसे गुड बाय कर सकते हैं, यह बताया। तारा आच्छा ने सभी को आगामी परियोजना की जानकारी दी।

महिला मंडल, मुंबई के विशेष आमंत्रित क्रांति सुराणा, कार्यकारिणी से अंजु कोठारी की विशेष उपस्थिति रही। लगभग ४० बहनों के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। आभार ज्ञापन व संचालन चेम्बूर सह-संयोजिका खुशबू लोढ़ा ने किया।

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं के निर्देशित शिल्पशाला 'द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी' का आयोजन आर०आर० नगर, महिला मंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत से किया गया। अध्यक्ष लता बाफना ने सभी का स्वागत किया।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉक्टर विनोद कुमार ने 'द पॉवर ऑफ पॉजिटिविटी' विषय को सुंदर ढंग से बताया। रंगों के एक चक्र को घूमाने से अनेकों प्रकार के अलग-अलग रंग निकलते हैं, इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के विचार, व्यवहार अलग-अलग होता है, आवश्यकता है एक-दूसरे को समझने की। जैन धर्म में भगवान महावीर ने जीवन में अनेकांतवाद को महत्त्व दिया, वैसे ही पॉजिटिव थिंकिंग के लिए भी अनेकांत का महत्त्व है।

हमें ज्यादा नेगेटिव न सोचकर हमेशा पॉजिटिव सोच रखनी चाहिए। बहनों ने जिज्ञासाओं का समाधान दिया। मुख्य वक्ता का परिचय श्वेता कोठारी ने दिया। अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया, उपाध्यक्ष सुमन पटवा, शोभा बोथरा, सहमंत्री हेमलता सुराणा, प्रचार-प्रसार मंत्री पूनम दक एवं कार्यसमिति की बहनें अच्छी संख्या में उपस्थित थी।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया। व चित्रा बाफना ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

सकारात्मक सोच से अच्छे जीवन का निर्माण संभव

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी और साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में बालोतरा न्यू तेरापंथ भवन में सकारात्मक कार्यशाला का आयोजन किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला देवी संकलेचा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि आज की कार्यशाला का विषय सकारात्मक सोच जो कि बहुत ही उपयोगी व अच्छा विषय है, सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति ही जीवन में शांति रख सकता है एवं सफलतम जीवन जी सकता है।

साध्वी प्रमोदश्री जी ने सकारात्मक सोच के क्या-क्या फायदे हैं एवं सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कैसे हो इस पर विश्लेषण प्रदान किया। साध्वी विजयप्रभा जी ने कहा कि नकारात्मक सोच जंगली घास की तरह है जो अपने आप उग जाता है, बच्चों को भी बुरी बातें सीखनी नहीं पड़ती किंतु अच्छी बातें उन्हें सीखनी पड़ती हैं। इसी तरह सकारात्मक सोच को भी हमें अपनाना होगा, तभी हम जीवन में विकास कर पाएँगे।

साध्वी शुभप्रभा जी ने कहा कि जहाँ आज के युग में बिखराव की स्थिति पैदा हो रही है, वहाँ ऐसी सकारात्मक सोच की कार्यशालाओं की आवश्यकता ज्यादा महसूस हो रही है।

कार्यक्रम में परामर्शक पीपी देवी ओस्तवाल, अभातेममं सदस्य व मारवाड़ क्षेत्र प्रभारी सारिका बागरेचा, उपाध्यक्ष रानी बाफना, सहमंत्री इंदु भंसाली एवं रेखा बालड़ सहित अनेक गणमान्यजन एवं श्रावक-श्राविका लगभग १११ उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का

कांटाबाजी।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, कांटाबाजी द्वारा 'उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी-जेठानी का' का आयोजन किया गया। साथ ही काव्यामृत के अंतर्गत तीन विषय क्षमा, प्रकाश व साहित्य पर स्वरचित कविता पाठ का आयोजन किया गया। देवरानी-जेठानी के मध्य जोड़ी में एक प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें देवरानी-जेठानी को आपस में एक-दूसरे के विषय में बताना था।

प्रश्न-उत्तर राउंड था और एक गेम भी खिलाया गया। इस प्रतियोगिता को आकर्षक तरीके से रखा गया। ८ देवरानी-जेठानी की जोड़ियों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। जो देवरानी और जेठानी को १५ वर्ष या उससे ऊपर हो गया, अभी भी साथ में हैं, उन्हें विशेष तौर पर सम्मानित किया गया। काव्यामृत के प्रतिभागियों को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रेरणा गीत के द्वारा हुआ। तत्पश्चात तेममं की अध्यक्षा बॉबी जैन ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन पूजा जैन ने किया एवं आभार ज्ञापन मंत्री सपना जैन ने किया।

सकारात्मक चिंतन कार्यशाला का आयोजन

सरदारपुरा।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में तेममं के तत्त्वावधान में 'सकारात्मक चिंतन' पर कार्यशाला रखी गई। कार्यशाला का प्रारंभ साध्वी सत्यवती जी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुआ। तेममं ने मंगलाचरण किया, उसके बाद महिला मंडल अध्यक्ष सरिता कांकरिया ने 'अच्छी सोच के फायदे' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने अपने विचार 'सकारात्मक कैसे हों' इस विषय पर बताते हुए कहा कि हम आत्मविश्वास से भरे रहें, सफलता मिलेगी, हमारे सोचने का नजरिया बदले, मुस्कुराने की आदत रखें, मुस्कान में इतनी बड़ी ताकत है कि नेगेटिव विचार को पॉजिटिव विचार में बदल देती है।

साध्वी पुण्य दर्शनाश्री जी ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी सत्यवती जी ने बहनों को मोटिवेट करते हुए कहा कि सोच को ऊँचाइयाँ दें, सोच से ही इंसान भगवान बन जाता है। जैसे नर से नारायण, अनु से परमाणु, बिंदु से सिंधु बन जाता है। आज हमारी बहनें हर क्षेत्र में सफलता के परचम लहरा रही हैं। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री चंद्रा जीरावला ने किया।

उम्मीद बेहतर कल की कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण कार्यशाला के अंतर्गत 'उम्मीद एक बेहतर कल की वर्कशॉप' का दूसरा चरण तेममं द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय इंदिरा गांधी नगर, बालोतरा में किया गया। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि महिला मंडल अध्यक्ष निर्मला देवी संकलेचा के द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग १६५ बच्चे उपस्थित हुए। पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल ने नशामुक्ति के बारे में विचार व्यक्त किए।

पूर्व निर्देशानुसार रमन और गोपाल दो बच्चों ने ईमानदारी और परोपकार के बारे में स्वयं तैयारी करके कहानी के माध्यम से विचार व्यक्त किए। दोनों बच्चों को सम्मानित किया गया। सहमंत्री रेखा बालड़ ने पंडित जवाहर नेहरू के बारे में बच्चों को बताया एवं प्रश्न-उत्तर पूछे गए।

विद्यालय के प्रिंसिपल समयसिंह गुर्जर ने अभातेममं के कार्यक्रम की प्रशंसा की। पार्षद रामेश्वर प्रजापत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद्य मेहता ने आभार व्यक्त किया तथा कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री संगीता बोथरा ने किया। कार्यक्रम में उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, सहमंत्री इंदु भंसाली, कन्या मंडल सह-संयोजिका मनीषा ओस्तवाल भी उपस्थित थे।

दीक्षार्थी दक्ष नखत का मंगलभावना समारोह

सूरत।

दीक्षार्थी दक्ष नखत का 'मंगलभावना समारोह' मुनि उदित कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण के साथ हुई। तेममं, सूरत अध्यक्ष राखी बैद तथा तेयुप मंत्री अभिनंदन गादिया द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मंत्री अनुराग कोठारी द्वारा दीक्षार्थी दक्ष नखत का संपूर्ण परिचय दिया गया।

पारिवारिकजन की ओर से दीक्षार्थी दक्ष नखत के दादी जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

दक्ष नखत ने बताया कि कैसे उनमें वैराग्य के भाव उत्पन्न हुए। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा उनका सम्मान किया गया।

मुनि उदित कुमार जी स्वामी द्वारा प्रेरणा पाथेय प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा मंत्री अनुराग कोठारी द्वारा किया गया।

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

शिक्षा का उद्देश्य है नैतिक मूल्यों का विकास

भीलवाड़ा।

साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में 'गुड ऑफ बेस्ट का संकल्प है' शिक्षा के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। साध्वी परमयशा जी ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं, भगवान के देवदूत हैं। संस्कार निर्माण की पहली यूनिट है–परिवार, दूसरी यूनिट है–पाठशाला। संस्कार किसी मॉल या मार्केट में नहीं मिलते। एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ स्कूल बनाने से बेहतर है। माँ वह टीचर है जो हर समय साथ रहती है।

साध्वीश्री जी ने आध्यात्मिक संकल्प विद्यार्थियों को ग्रहण करवाते हुए उनके उन्नत भविष्य की मंगलकामना की। साध्वी विनम्रयशा जी ने कविता के माध्यम से सभी बच्चों को अनुशासन में रहने की प्रेरणा दी।

साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने कहा कि मोमबत्ती की तरह प्रकाश और अगरबत्ती की तरह खुशबू विद्यार्थी जीवन में रहनी चाहिए। विभिन्न मुद्राओं, आसनों और ध्वनियों से बच्चों में मेमोरी पॉवर को बढ़ाने की प्रेरणा दी।

साध्वी कुमुदप्रभा जी ने कहा कि अगर हमारा आत्मविश्वास मजबूत है तो जिंदगी में सब कुछ संभव है। जैसा संकल्प होता है वैसे जीवन का निर्माण संभव है। संकल्प बल को मजबूत बनाते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

कार्यक्रम का मंगलाचरण संयम गीत से चंद्रकांता चोरड़िया, विमला रांका, लाड देवी सियाल, भगवतीलाल सियाल ने किया।

ग्रामोत्थान संस्थान के परिषद सचिव ताराचंद जोशी, सेवा निवृत्त प्रिंसिपल शिवप्रकाश जोशी, सरपंच जगदीश जाट, कालू शंकर त्रिपाठी आदि ने अपने सौभाग्य की सराहना की।

मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि भगवतीलाल सियाल ने ३५० बच्चों को गिफ्ट प्रदान किया। स्कूल स्टाफ की अच्छी उपस्थिति रही।

दो अध्यात्मिक धाराओं का मिलन

एलाऊर (तमिलनाडु)।

मुनि सुधाकर कुमार जी एवं मुनि नरेश कुमार जी का जैन मूर्तिपूजक संघ के वरिष्ठतम आचार्यश्री नित्यानंद जी महाराज एवं युवा संत मुनि मोक्षानंद जी से चेन्नई, कोलकाता हाईवे पर मधुर मिलन हुआ। मिलन के प्रसंग पर दोनों ओर से आध्यात्मिक स्नेह की अनुभूति हुई।

आचार्यश्री नित्यानंद जी महाराज ने कहा कि संतों का मिलन सौभाग्य से होता है। जैन एकता के लिए परस्पर विचार-विमर्श आवश्यक है। हमें एक-दूसरे के विचारों और सिद्धांतों के प्रति उदारता और विशालता का परिचय देना चाहिए।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने कहा कि संतों का मिलन आनंद की अनुभूति कराता है। संत समागम से सौभाग्य एवं अभिनव आनंद की अभिवृद्धि होती है।

मुनि सुधाकर कुमार जी ने पूज्य संत मोक्षानंद जी के जन्मदिवस पर आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की। आचार्यश्री और मुनिवृंद ने पदयात्रा में सहयात्री बनकर जैन एकता का संदेश दिया।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ माधावरम् ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा ने बताया कि मुनिश्री माधावरम् से विहार कर चिकमंगलूर की ओर विहाररत हैं। इस अवसर पर दिनेश बाफना, डॉ० सुनील भंडारी, अनील भंडारी इत्यादि अनेक श्रावक भी उपस्थित थे।

उत्सव रिश्तों का कार्यशाला

राउरकेला।

तेरापंथ भवन में तेरस की गोष्ठी रखी गई। बहनों ने नमस्कार महामंत्र से शुरुआत की। तत्पश्चात सभी ने मिलकर स्वामी जी की गीतिकाओं का संगान किया। इसके बाद कार्यशाला रखी गई। उत्सव रिश्तों का, प्रेम देवरानी जेठानी का। बहनों ने उत्साह के साथ भाग लिया और अपने निजी अनुभव साझा किए।

खट्टे-मीठे अनुभवों की रोचक बातें बताई। सभी ने देवरानी-जेठानी के साथ रहने में लाभ ही ज्यादा बताए और प्यार के साथ नोक-झोंक होना भी स्वाभाविक बताया। सभी को मनोरंजक गेम भी खिलाए गए।

विजेता जोड़ी को सम्मानित किया गया। कार्यशाला का संयोजन संगीता दुगड़ ने और आभार ज्ञापन सचिव विनीता जैन ने किया। अध्यक्ष सरोज गोलछा ने सभी बहनों को संबोधित किया और आगे भी कार्यशाला में आने के लिए प्रेरित किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

दिल्ली।

राजेश-सोनिया सेठिया के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से उपासक व संस्कारक विमल गुनेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

दिल्ली।

ललित विजय डागा श्रीडूंगरगढ़ निवासी, दिल्ली प्रवासी का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रवीण गोलछा, आयाम राज्य सहयोगी संस्कारक मनीष बरमेचा ने संपूर्ण विधि-विधान से संपन्न करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। डागा परिवार की ओर से संस्कारकों को साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया।

पूर्वांचल-कोलकाता।

पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी पवन संचेती का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक विजय कुमार बरमेचा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा जैन संस्कार विधि से संपादित करवाया।

जैन संस्कार विधि के संयोजक श्रेयांस भंसाली और संदीप जैन ने परिषद की ओर से मंगलभावना यंत्र प्रदान किया साथ ही संचेती परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

पूर्वांचल-कोलकाता।

सरदारशहर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी विक्रम चोरड़िया का नूतन गृह प्रवेश अभातेयुप संस्कारक सुरेंद्र सेठिया ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ गृह प्रवेश का कार्यक्रम संपादित करवाया।

तेयुप सदस्य विनय चोरड़िया ने शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया। साथ ही चोरड़िया परिवार का आभार ज्ञापित किया।

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी हंसराज बाफना का नूतन गृह प्रवेश संस्कारक पुष्पराज सुराणा ने संपूर्ण विधि-विधान द्वारा नमस्कार महामंत्र, मंगल-स्तोत्रों के उच्चारण के साथ गृह प्रवेश कार्यक्रम संपादित करवाया।

संस्कारक पुष्पराज ने शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया। तथा बाफपना परिवार का आभार ज्ञापित किया।

चेंबर का शुभारंभ

दिल्ली।

हरीश आंचलिया के नूतन चेंबर (सुप्रीम कोर्ट में) का शुभारंभ संस्कारक पवन गिड़िया व आयाम राज्य सहयोगी संस्कारक मनीष बरमेचा ने मंगल मंत्रोच्चार व विधिवत् रूप से जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से आंचलिया परिवार का आभार व्यक्त किया। तेयुप, दिल्ली की ओर से आंचलिया परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

विवाह संस्कार

गंगाशहर।

श्रीगंगाशहर निवासी, गोपाल खड़गावत की सुपुत्री आशा का शुभ विवाह गंगाशहर निवासी भैरूदान गोलछा के सुपुत्र राजेश कुमार के साथ जैन संस्कार विधि से अभातेयुप संस्कारक पवन छाजेड़, भरत गोलछा और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपादित करवाया।

कार्यक्रम में गणमान्यजनों और पारिवारिक लोगों की अच्छी उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 दिसंबर, 2022

✦ *भौतिक विकास के बिना नगर, प्रांत और राष्ट्र परिपूर्ण विकास वाला नहीं बन सकता।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

पहला प्रकरण

प्रश्न : क्या मन ज्ञानात्मक है?

उत्तर : भाव मन चैतन्य के विकास का एक स्तर है, इसीलिए वह ज्ञानात्मक है, किंतु उसका कार्य स्नायुमंडलं, मस्तिष्क और चिंतन-योग्य पुद्गलों की सहायता से होता है, इसलिए वह पौद्गलिक भी है। हमारी शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की क्रियाएँ स्नायुमंडल के द्वारा संचालित व नियंत्रित होती हैं। मस्तिष्क के दो भाग हैं–

(१) बृहन्मस्तिष्क। (२) लघु मस्तिष्क।

ज्ञानवाही स्नायु बृहन्मस्तिष्क तक अपना संदेश पहुँचाते हैं और उसके ज्ञान प्रकोष्ठ क्रियाशील हो जाते हैं, मन का मुख्य केंद्र यह बृहन्मस्तिष्क है।

कुछ आचार्य मन का स्थान हृदय को मानते हैं और कुछ आचार्य उसे समूचे शरीर में व्याप्त मानते हैं। उसका कोई निश्चित स्थान नहीं मानते। उनका मत है कि जहाँ श्वास है, वहाँ मन है और जहाँ मन है वहाँ श्वास है। ये दोनों दूध और पानी की भाँति परस्पर मिले हुए हैं–

मनो यत्र मरुत् तत्र, मरुद् यत्र मनस्ततः।
अतस्तुल्यक्रियावेतौ, संवीतौ क्षीरनीरवत्।।

(योगशास्त्र ५/२)

मन समूचे शरीर में व्याप्त है। इसका अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि मानसिक क्रिया के प्रयोजक केंद्र सारे शरीर में हैं। संवेदनावाही और ज्ञानवाही स्नायु समूचे शरीर में हैं। वे मस्तिष्क से संबद्ध हैं, इसलिए मानसिक व्यापार समूचे शरीर में संप्रेषित होता है, किंतु उसका केंद्र स्थान समूचा शरीर नहीं है।

प्रश्न : क्या मस्तिष्क की क्रिया ही मन नहीं है?

उत्तर : मस्तिष्क की क्रिया मन का एक भाग है किंतु केवल वही मन नहीं है।

प्रश्न : क्या मस्तिष्क के बिना मानसिक क्रिया होती है?

उत्तर : आँख के गोले के बिना कोई देख नहीं सकता, फिर भी उस गोलक की क्रिया को ही देखने की क्रिया नहीं कहा जा सकता। वैसे ही मस्तिष्क के बिना मनन की क्रिया नहीं होती, फिर भी मस्तिष्क ही मन नहीं है। आँख का गोला देखने में सहयोग करता है, वैसे ही मस्तिष्क मनन में सहायक है। चैतन्य का विकास और मस्तिष्क-रचना दोनों के समुचित योग से ही मानसिक क्रिया निष्पन्न होती है।

साधना के लिए इंद्रियों और मन की क्रिया और प्रक्रिया का ज्ञान आवश्यक है। बाह्य जगत् के साथ हमारा संपर्क इंद्रियों और मन के माध्यम से होता है। दृश्य जगत् को हम आँखों से देखते हैं, श्रव्य जगत् को हम कानों से सुनते हैं, गंधवान जगत् को हम सूँघते हैं, रसनीय जगत् का हम रस लेते हैं और स्पृश्य जगत् का हम स्पर्श करते हैं। रूप, शब्द, गंध, रस और स्पर्श का अस्तित्व इंद्रियों के लिए नहीं है फिर भी उनमें ग्राह्य-ग्राहक भाव है। इसलिए इंद्रियाँ ग्राहक हैं और विषय उनके द्वारा गृहीत होते हैं। इंद्रिय और विषय में ज्ञाता और ज्ञेय का संबंध है। वह साधना का विषय नहीं है किंतु एक मनुष्य दृश्य को देखता है और उसके प्रति उसके मन में राग या द्वेष की ऊर्मि उठती है, यह स्थिति साधना की परिधि में आती है। इंद्रियों का प्रयोग करना और उसमें राग या द्वेष की ऊर्मियों को उठने न देना, इसी का नाम है साधना। यह तभी संभव हो सकता है जब मनुष्य को शुद्ध चैतन्य की भूमिका का अनुभव प्राप्त हो।

जानने और राग या द्वेष की ऊर्मि उत्पन्न होने में निश्चित संबंध नहीं है। किंतु जहाँ साधना नहीं होती, चैतन्य की केवल चैतन्य के रूप में अनुभूति या स्वीकृति नहीं होती, वहाँ ज्ञाता और ज्ञेय का संबंध अनुरागी और प्रेम या द्वेष्टा और द्वेष्य के रूप में बदल जाता है। ज्ञान के उत्तरकाल में होने वाले राग या द्वेष को निर्वीर्य करना ही साधना का उद्देश्य है।

क्या यह संभव है, कोई व्यक्ति सुस्वादु पदार्थ खाए और उसके मन में राग उत्पन्न न हो? क्या यह संभव है, कोई आदमी बासी अन्न खाए और उसके मन में ग्लानि या द्वेष उत्पन्न न हो? साधारण आदमी के लिए यह संभव नहीं है। यह असंभव नहीं है किंतु संभव उसी के लिए है जिसने ऐसी स्थिति के निर्माण के लिए प्रयत्न किया है।

जिस व्यक्ति के मन में इंद्रिय-विषयों के प्रति आकर्षण है, वह उन्हें प्राप्त कर राग या द्वेष से मुक्त नहीं रह सकता। जिसके आकर्षण का प्रवाह बदल जाता है, विषयों के प्रति उसका आकर्षण समाप्त हो जाता है। यह वह स्थिति है जिसके लिए मनुष्य साधना के पथ पर चलता है।

इंद्रियों के साथ वृत्तियों का संबंध नहीं होता तब तक इंद्रिय और विषय में ज्ञाता और ज्ञेय का संबंध होता है। पानी अपने आपमें स्वच्छ है। उसमें गंदगी आ मिलती है तब वह मैला हो जाता है। इंद्रिय और मन भी अपने आपमें स्वच्छ हैं। उनमें वृत्तियों की गंदगी आ जाती है तब वे मलिन बन जाते हैं। हम तब तक इंद्रिय और मन की गंदगी का शोधन या समापन नहीं कर सकते, जब तक वृत्तियों का शोधन या समापन नहीं कर लेते।

हमारी इंद्रियाँ चंचल क्यों हैं? मन चंचल है इसलिए इंद्रियाँ चंचल हैं। प्रश्न होगा–मन चंचल क्यों है? हमारी वृत्तियाँ चंचल हैं इसलिए मन चंचल है। चंचलता के हेतु इंद्रियाँ और मन नहीं हैं, वे तो चंचलता का भोग करती हैं। चंचलता के मूल हेतु वृत्तियाँ हैं। इसलिए जो व्यक्ति इंद्रिय और मन की निर्मलता और उनकी चंचलता के समापन का इच्छुक है उसके लिए यह प्राप्त होता है कि वह वृत्तियों के संशोधन का प्रयत्न करे।

वृत्तियाँ क्या हैं और उनके संशोधन की प्रक्रिया क्या है? मनुष्य के जीवन-परिचालन में जिसका सक्रिय योग होता है, उसे वृत्ति कहा जाता है। वर्तमान की क्रिया अतीत में वृत्ति का रूप ले लेती है। मनुष्य में–

(१) बुभुक्षा–खाने की इच्छा होती है। (२) शरीर-धारण की इच्छा होती है। (३) ऐन्द्रियिक आसक्ति होती है। (४) श्वास लेने का संस्कार होता है। (५) बोलने की इच्छा होती है। (६) चिंतन का संस्कार होता है।

ये जीवन-धारण की मौलिक वृत्तियाँ हैं। वृत्ति के पौषक तत्त्व दो हैं–राग और द्वेष। रागात्मक भावना के द्वारा मनुष्य प्रियता या अनुकूलता की अनुभूति करता है और द्वेषात्मक भावना के द्वारा मनुष्य अप्रियता या प्रतिकूलता की अनुभूति करता है। रागात्मक भाव माया और लोभ के रूप में प्रकट होता है। द्वेषात्मक भाव क्रोध और अभिमान के रूप में प्रकट होता है। ये वृत्तियों को अपने रंग में रंग देते हैं इसलिए इन्हें कषाय कहा गया है। इन भावों को पुष्टि देने वाले कुछ सहायक भाव हैं। जैसे–हास्य, रति-अरति, भय, शोक, घृणा, काम-वासना।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(११५)

खोल झरोखा स्मृतियों का बैठी मैं कब से
नहीं झलक अपनी पल भर तुमने दिखलाई
कितनी बार पुकारा तुमको अंतर्मन से
हुई नहीं क्यों प्रभु दर पे मेरी सुनवाई।।

कच्ची कलियाँ जिस पल थी खिलने को आतुर
बनकर तुम ऋतुराज संघ-उपवन में आए
नई पौध को सिंचन व संरक्षण देकर
डाल-डाल पर ये सतरंगे सुमन खिलाए
सुमनों में सौरभ भरने के समय देवते!
छोड़ गए तुम कहाँ अचानक समझ न पाई।।

लहराते सागर-से उतरे तुम धरती पर
जगी चाह बन लहर तुम्हारे साथ रहूँगी
निस्तरंग जलनिधि होकर तुम हुए अगोचर
व्यथा अबोली मन की बोली किसे कहूँगी
नहीं रचे तटबंध कभी भी तुम्हें बाँधने
फिर क्यों यों बिन कहे गगन-सरणी अपनाई?

सूरज-सा ले तेज चमकते तुम गण-नभ में
रश्मि एक बनकर जिसकी मैं भी रहती थी
शिखर तलहटी की यात्रा में भेद न समझा
मन की मरुस्थली को नंदन वन कहती थी
करूँ सदा अनुगमन तुम्हारा देखा सपना
रहा अधूरा होगी अब कैसे भरपाई।।

(११६)

उमड़ रहे भीतर कितने यादों के बादल
उन्हें बरसने दो रोको मत रे चेतन मन!
पीर पिघलकर बह जाए आँखों के द्वारा
नहीं और उसका कोई भी है आलंबन।।

नहीं कल्पना के पट मैंने बुने कभी भी
नित यथार्थ की भू पर अपने कदम बढ़ाए
क्यों सपना-सा दिखा गए फिर तुम जीवन में
क्या सोचा होगा उस पल हम समझ न पाए
छिपी हुई बातें कितनी भीतर-ही-भीतर
बता रहा उनको संस्मरणों का वातायन।।

वार सामने से जितने भी किए मौत ने
झेल लिए उन सबको तुमने सहज भाव से
मिली सूचना कभी मौत आने वाली है
रहे पूर्णतः मुक्त देवते! तुम तनाव से
दबे पाँव चलकर आई वह सहमी-सहमी
दिखा गई नादान स्वयं का छिछलापन।।

रही भव्यता और दिव्यता जो जीवन में
शब्दों की गागर में वह ना कभी समाई
धरती से नभ तक फैला आलोक तुम्हारा
पर अपने नयनों में उसको आंज न पाई
भ्रम के घेरे से सबको बाहर निकाल कर
अमिट सत्य का करा दिया तुमने दिग्दर्शन।।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(९) आतङ्के उपसर्गे च, जातायां विरतौ तनौ।
ब्रह्मचर्यस्य रक्षायै, दयायै प्राणिनां तथा।।

(१०) नानारूपं तपस्तप्तुं, कर्मणां शोधनाय च।
आहारस्य परित्यागः, कर्तुमर्हति संयतिः।। *(युग्मम्)*

असाध्य रोग, भयंकर उपसर्ग, शरीर में विरक्ति, ब्रह्मचर्य की रक्षा, जीव-हिंसा से विरति, नाना प्रकार के तप और कर्म के विशोधन के लिए मुनि को भोजन का परित्याग करना उचित है।

प्रस्तुत श्लोकों में भोजन करने और न करने के कारणों का उल्लेख है।

भोजन करने के पाँच कारण ये हैं—(१) क्षुधा को शांत करने के लिए। (२) सेवा करने के लिए। (३) प्राणों को धारण करने के लिए। (४) संयम की सुरक्षा के लिए। (५) धर्म-चिंता करने के लिए।

भोजन न करने के छह कारण ये हैं—(१) रोग हो जाने पर। (२) शरीर के प्रति विरक्ति हो जाने पर। (३) ब्रह्मचर्य-पालन के लिए। (४) दया के लिए। (५) संकल्प को दृढ़ करने के लिए। (६) प्रायश्चित्त के लिए।

ये सभी कारण शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए निर्दिष्ट हैं।

साधक एकमात्र शरीर-निर्वहन करने के लिए खाता है, रस-तुष्टि के लिए नहीं। पुरुषार्थ की अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन शरीर है। साधक के लिए उसकी सुरक्षा भी उतनी ही अपेक्षित है जितनी आत्मा की। शरीर के माध्यम से ही अशरीर की साधना की जाती है।

बौद्धि ग्रंथों में भी आहार करने की मर्यादा का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि 'भिक्षु-क्रीड़ा, मद, मंडन या विभूषा के लिए भोजन न करे किंतु शरीर को रखने के लिए, रोग के उपशमन के लिए तथा ब्रह्मचर्य के पालन के लिए भोजन करे।'

(११) अल्पवारमनासक्तः, वस्तून्यल्पानि संख्यया।
मात्रामल्पाञ्च भुञ्जानो, मिताहारो भवेद् यतिः।।

जो मुनि अनासक्त भाव से एक या दो बार खाता है, संख्या में अल्प वस्तुएँ और मात्रा में अल्प खाता है, वह मितभोजी है।

(१२) जितः स्वादो जितास्तेन, विषयाः सकलाः परे।
रसो यस्यात्मनि प्राप्तः, स रसं जेतुमर्हति।।

जिसने स्वाद को जीत लिया, उसने सब विषयों को जीत लिया। जिसे आत्मा में रस-आनंद की अनुभूति हो गई, वही पुरुष रस-इंद्रिय-विषयों को जीत सकता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

तप धर्म

प्रश्न १ : तप किसे कहते हैं?
उत्तर : जिस क्रिया से विजातीय तत्त्व झड़ जाएँ तथा आत्मा उज्ज्वल होती है, उसे तप कहते हैं। तप भी निर्जरा है।

प्रश्न २ : तप का क्या महत्त्व है?
उत्तर : तप करने वाला व्यक्ति पूर्व संचित कर्मों को क्षीण कर विशुद्धि को प्राप्त होता है। इस विशुद्धि से वह वीतराग, सर्वज्ञ व मुक्तावस्था को प्राप्त होता है।

प्रश्न ३ : क्या तप और निर्जरा एक है?
उत्तर : निर्जरा नौ तत्त्वों में सातवाँ तत्त्व है। तप मोक्ष के क्रियात्मक चार मार्गों में तीसरा मार्ग है। फलित में दोनों एक हैं।

प्रश्न ४ : तप का उद्देश्य क्या है?
उत्तर : केवल आत्मशुद्धि के लिए तप करना चाहिए। तपस्या का उद्देश्य ऐहिक या पारलौकिक भौतिक सुख-समृद्धि व प्रतिष्ठा-प्राप्ति नहीं होना चाहिए। जो प्रतिफल की कामना किए बिना तप करता है, उसका वर्तमान भी पवित्र होता है और परलोक भी। इस तरह वह दोनों लोकों की आराधना कर लेता है।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य डालगणी

डालगणी के पास जयाचार्य, मघवागणी, माणकगणी—तीन आचार्यों की अनुभव संपदा थी। उन्होंने कुशलता के साथ तेरापंथ धर्मसंघ का संचालन किया और उसे अनुशासन, संगठन और मर्यादा की भूमिका पर तेजस्विता प्रदान की।

डालगणी के जीवन में कोमलता और कठोरता का अपूर्व संगम था। वे इतने तेजस्वी थे कि उनके निकट रहने वाले संत भी उनको कोई बात निवेदन करने में सकुचाते थे। कोमल इतने थे कि भक्तों की प्रार्थना को पूर्ण करने के लिए वे अपने शरीर को परवाह न करते हुए कई बार यात्रा में लंबा घुमाव ले लेते थे।

डालगणी ने बारह वर्ष तक तेरापंथ धर्मसंघ के दायित्व को कुशलता से वहन किया। शारीरिक अस्वस्थता के कारण अंतिम दो चातुर्मास डालगणी के लाडनूं में हुए। वि०सं० १९६६ भाद्रपद शुक्ला द्वादशी के दिन वे इस संसार से महाप्रयाण कर गए।

डालगणी के शासनकाल में एक सौ इकसठ दीक्षाएँ हुईं। उनमें छत्तीस साधु और एक सौ पचीस साध्वियाँ थीं।

आचार्य कालूगणी

तेरापंथ के अष्टम आचार्य कालूगणी के शासनकाल को तेरापंथ का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है। इस समय में तेरापंथ धर्मसंघ में शिक्षा, दीक्षा, साहित्य, साधना, कला आदि विभिन्न दिशाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। यद्यपि कालूगणी के युग में भी संघ को भयंकर विरोधों का सामना करना पड़ा था पर वे विरोध अग्नि में तपे हुए स्वर्ण की भाँति संघ की गरिमा को और अधिक निखार देने वाले बने।

पूज्य कालूगणी का जन्म राजस्थान के अंतर्गत बीकानेर संभाग के छापर नामक कस्बे में वि०सं० १९३३ फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को हुआ। उनके पिता का नाम मूलचंदजी कोठारी व माता का नाम छोगांजी था। कालूगणी बचपन से ही बहुत संस्कारी थे। धर्म के प्रति उनके मन में विशेष अनुराग था। माता की धार्मिक वृत्ति ने उनके अनुराग को और अधिक वृद्धिंगत किया।

वि०सं० १९४४ आश्विन शुक्ला तृतीया को पंचम आचार्य मघवागणी के करकमलों से उन्होंने अपनी माता छोगांजी के साथ दीक्षा ग्रहण की। मघवागणी के वरद हस्त की छत्रछाया में मुनि कालू की साधना एवं अध्ययन प्रारंभ हुआ। बालक अवस्था में भी कालूगणी बड़े स्थिरयोगी थे। बुद्धि तीक्ष्ण एवं प्रतिभा विलक्षण थी। मघवागणी की सन्निधि में रहने का उन्हें लगभग पाँच वर्ष का ही अवसर प्राप्त हुआ। इस छोटी-सी अवधि में उन्होंने अपने को बहुआयामी विकास दिया।

मघवागणी के पश्चात् लगभग साढ़े चार वर्ष तक माणकगणी तथा बारह वर्ष तक डालगणी का शासनकाल रहा। पूज्य कालूगणी मघवागणी की तरह ही माणकगणी एवं डालगणी के सामने पूर्ण समर्पित एवं जागरूक बने रहे। उनकी अप्रमत्तता इतनी थी कि उन्हें कभी उलाहने के लिए एक भी शब्द संभवतः सुनना नहीं पड़ा। माणकगणी के स्वर्गवासी होने के पश्चात् अंतरिम शासन व्यवस्था को सुस्थिर बनाए रखने में कालूगणी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। डालगणी ने जब से आचार्यपद को संभाला, कालूगणी की विशेषताओं से वे बहुत परिचित हो गए। परिणामस्वरूप उन्हें अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के संबंध में चिंतित होना नहीं पड़ा। कालूगणी के रूप में उनके सामने बना-बनाया व्यक्तित्व था। उन्हीं को उन्होंने अपना उत्तराधिकारी समर्पित कर दिया।

वि०सं० १९६६ भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा को कालूगणी आचार्य पद पर आसीन हुए। कालूगणी का व्यक्तित्व अनूठा था। उसमें चुंबकीय आकर्षण था। एक बार तो विरोधी से विरोधी व्यक्ति भी सहसा उनके चरणों में नत हुए बिना नहीं रहता।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 दिसंबर, 2022

✦ *ज्ञानवान व्यक्ति अनेक समस्याओं का समाधायक बन सकता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

ओडिशा स्तरीय मंगलभावना समारोह

रामपुर।

कांटाबाजी से राउलकेला की ओर प्रस्थान पर ओडिशा स्तरीय मंगल समारोह मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी का मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। मुनि रमेश कुमार जी ने कहा कि फूल बता रहा है कि माली ने मूल का सिंचन किया है। मूल का सिंचन करने से पौधा फलदायी बन जाता है। धार्मिकता का सिंचन समाज को फलदायी बनाता है। हमें मूल को देखना है और उसका सिंचन करना है।

मुनि प्रशांत कुमार जी, मुनि कुमुद कुमार जी ने मूल का सिंचन किया है। दोनों संतों ने इस उत्कल की धरा को धर्म का सिंचन दिया। सत्य, अहिंसा, दया, करुणा का सिंचन किया। हम जिस धर्मसंघ से जुड़े हुए हैं वो हमारा मूल है। हमारा धर्मसंघ मजबूत बने, यह हमारा प्रयास होना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि साधु संत जहाँ भी जाएँ वहाँ मंगल ही मंगल है। गुरु का आशीर्वाद साथ होने से सब कुछ मंगल हो जाता है।

मुनि रमेश कुमार जी स्वामी का मंगलभाव लेकर आज प्रस्थान कर रहे हैं। सभी का मंगल हमें शक्ति संपन्न बना देता है। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि कांटाबाजी प्रवास साताकारी रहा, आनंददायक रहा। छोटे-छोटे गाँव में साताकरी भवन का आध्यात्मिक दृष्टि से उपयोग होता रहे। प्रतिदिन माला, सामायिक का उपक्रम भवन में चलता रहे। पश्चिम उड़ीसा में धार्मिक दृष्टि से ठोस कार्य हो जिससे श्रावक-श्राविका में तत्त्व ज्ञान बढ़े।

मुनि रत्नकुमार जी ने कहा कि संत तो मंगल ही होते हैं। मंगलभावना संतों के प्रति प्रमोद भावना व्यक्त करने का तरीका है। चातुर्मास से श्रावक-श्राविका समाज में धार्मिक भावना परिपक्व बनती है। आध्यात्मिकता हमारे जीवन का मूल है। उससे विनय, विवेक, क्षमा, सहनशीलता का विकास होता है।

मीडिया प्रभारी अविनाश जैन ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। रामपुर सभा मंत्री गोविंद जैन, कांटाबाजी सभा मंत्री सुमित जैन, कांटाबाजी तेयुप अध्यक्ष अंकित जैन, रामपुर तेयुप अध्यक्ष राकेश जैन, महिला मंडल रामपुर से अनुराधा, प्रीति जैन, ज्ञानशाला प्रशिक्षक रश्मि जैन, बगुमुंडा सभा अध्यक्ष अशोक जैन, बलांगीर से मनोज जैन, टिटलागढ़ सभा कोषाध्यक्ष निर्मल चौधरी, केसिंगा सभा अध्यक्ष रामनिवास जैन, घसियन से बाबूलाल जैन, प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, आंचलिक प्रभारी छत्रपाल जैन, महासभा प्रभारी केशव नारायण जैन, विनोद जैन, ज्ञानशाला परिवार ने वक्तव्य के द्वारा मंगलकामना व्यक्त की। कांटाबाजी तेमम ने विदाई गीत प्रस्तुत किया। आभार ज्ञापन कुणाल जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन विशाल जैन ने किया।

'अपनी संस्कृति, अपने संस्कार' विषयक कार्यशाला का आयोजन

काकीनाड़ा, आंध्र प्रदेश।

काकीनाड़ा शहर में कृष्णा अर्पाटमेंट में गुजराती हॉल में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 'अपनी संस्कृति, अपने संस्कार' विषयक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथी सभा काकीनाड़ा द्वारा किया गया।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि जैसी संस्कृति होती है, वैसे संस्कार होते हैं। जब तक यह सामंजस्य बना रहेगा तब तक व्यक्ति और उसका व्यवहार दोनों की सुरक्षा होगी। दूसरे शब्दों में धर्म और धार्मिक दोनों की सुरक्षा हो सकेगी। भारतीय संस्कृति गौरवपूर्ण संस्कृति रही है। अत्यंत प्रेरक रही है। जैनों की भी अपनी संस्कृति रही है। जिसे मानव संस्कृति, विश्व संस्कृति भी कहा जा सकता है।

मुनिश्री ने भावी पीढ़ी को संबोधित करते हुए कहा कि आज की पीढ़ी ने बहुत विकास किया है पर सावधान रहने की जरूरत है। विकास तो बहुत हुआ और संस्कारों में कमी आई है। गलत संगत से बचें, गलत आदतों से दूर रहें। नशामुक्त और मांसाहार पर दूरी बनी रहे। मर्यादा में रहें। अभिभावक भी बच्चों को भले उपहार दें, पर साथ में संस्कार जरूर दें।

बालमुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि जीवन में संस्कारों का सबसे ऊँचा स्थान होता है। संस्कार जीवन का आधार है। संस्कार बिना जीवन बेकार है। विनय, सहनशीलता, मृदुता, विमलता यह संस्कार जिसमें होते हैं वह विकास करता है। संस्कार के निर्माण में माँ का बहुत योगदान रहता है। माँ जन्मदात्री ही नहीं, संस्कारदात्री भी होती है। कार्यक्रम के प्रारंभ में तेमम, काकीनाड़ा की बहनों ने मंगलाचरण किया। उपस्थिति अच्छी रही।

हर विद्यार्थी विद्या के साथ विनम्र एवं अनुशासनशील बन देश की सेवा करें

बरोठी।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में साध्वी मंजुयशा जी के सान्निध्य में अणुव्रत, जीवन-विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान संबंधी कार्यक्रम आयोजित हुआ। स्कूल में करीब ८०० बच्चे उपस्थित थे। अध्यापक वर्ग की संख्या भी काफी थी।

कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री जी ने नवकार मंत्र के मंगल उच्चारण से हुआ। वहाँ के प्रिंसिपल ने साध्वीवृंद का अपने स्कूल प्रांगण में स्वागत करते हुए कहा कि आज हमारा परम सौभाग्य है कि आज इस प्रांगण में संतों के चरण पड़े। संतों का जीवन बहती हुई सरिता के समान होता है। बहता हुआ पानी बड़ा निर्मल होता है, वैसे ही त्याग साधु-संतों का जीवन पवित्र और निर्मल होता है।

साध्वीश्री जी ने कहा कि बच्चे का जीवन कोरे कागज के समान होता है, उस पर माता-पिता, गुरुजन जैसा चित्र खिंचना चाहें वैसे उसके जीवन को रेखांकित कर सकते हैं। ये हमारे देश के भावी कर्णधार हैं। विद्यालय विद्यार्थी के लिए ज्ञान का मंदिर है। विद्या के साथ विद्यार्थी के जीवन में विनम्रता, शालीनता, सरलता, मृदुता, अनुशासनबद्धता, नशामुक्ति, अच्छे विचार, अच्छा व्यवहार, सत्यवादिता, देश के प्रति भक्ति आदि के अच्छे गुणों का जागरण हो।

हर विद्यार्थी अपने माता-पिता, गुरुजन आदि सभी के प्रति आदर भाव, सम्मान का भाव रखे। साध्वीश्री जी ने सभी बच्चों को बौद्धिक एवं स्मृति विकास के, नशामुक्ति के भी प्रयोग करवाए। कई बच्चों ने साध्वीश्री जी के प्रेरणादायी प्रवचन को सुनकर जीवनभर बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांस आदि अखाद्य पदार्थों के कभी भी उपयोग में नहीं लेने का दृढ़-संकल्प लिए। अंत में वहाँ के प्रिंसिपल ने अध्यापक वर्ग की ओर से, विद्यार्थी वर्ग की एवं पूरे परिसर की ओर से कृतज्ञता एवं आभार व्यक्त किया। मंगलपाठ से कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

सरवद गाँव।

द्रुतगति से लाडनूं से मुंबई की ओर विहाररत साध्वी जिनप्रभा जी आदि साध्वी सुषमा कुमारी जी आदि व साध्वी विमलप्रज्ञा जी आदि सोजत रोड से सायंकालीन विहार कर सरवद गाँव पधारे। सभी १३ साध्वीवृंद चंदावल से से २२ किलोमीटर का दीर्घ विहार कर सोजत पधारे थे। सोजत से आध्यात्मिक मिलन व रात्रिकालीन प्रवास हेतु विहाररत साध्वीवृंद सायंकालीन ५ किलोमीटर का विहार कर सरवद गाँव पधारे।

दूसरी ओर समदडी की ओर से विहाररह साध्वी पावनप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी का प्रातः सिरियारी से १३ किलोमीटर का विहार कर मांडा गाँव पधारे और आध्यात्मिक मिलन का लक्ष्य रखते हुए सायंकालीन ६ किलोमीटर का विहार कर सरवद गाँव पधारे।

सूर्यास्त से कुछ समय पूर्व पाँचों सिंघाड़ों (२० साध्वीश्री) का सौहार्दपूर्ण आध्यात्मिक मिलन सरवद गाँव में हुआ।

इस अवसर पर सेवारत मुंबई, केलवा व आमेट और सरवद गाँव का श्रावक समाज इस मनोहारी मिलन को देख अपने भाग्य की प्रशंसा कर रहा था। दोनों ग्रुप ने एक दिन में लगभग ४५ किलोमीटर की दूरी तय की।

दीक्षार्थी खुशबू कोचर का मंगलभावना समारोह

राजाराजेश्वरी नगर, बैंगलोर।

मुमुक्षु खुशबू कोचर को सिरियारी में दीक्षा प्रदान करने की आज्ञा की घोषणा के साथ ही पूरे क्षेत्र में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। दीक्षार्थिनी बहन खुशबू कोचन के उज्ज्वल आध्यात्मिक भविष्य की मंगलभावना व्यक्त करते हुए आर०आर० नगर सभा भवन में मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तुलसी स्वर संगम की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभाध्यक्ष छतर सेठिया, तेयुप के मंत्री विपुल पितलिया, महिला मंडल अध्यक्ष लता बाफना, अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य मधु कटारिया, सरोज बैद, हेमलता सुराणा सभी ने अपनी भावनाओं से दीक्षार्थी बहन की संयम यात्रा के लिए शुभ भविष्य की मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

मुमुक्षु बहन खुशबू कोचर ने दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने हेतु आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति अनंत कृतज्ञता ज्ञापित की तथा आर०आर० नगर के संपूर्ण समाज से प्राप्त प्रेम एवं अपनापन के लिए सभी को साधुवाद दिया। तथा महिला मंडल की बहनों के साथ अपने सुखद अनुभवों को साझा किया। तीनों संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मान किया। महिला मंडल के उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने संचालन किया। मंत्री सीमा छाजेड़ ने आभार ज्ञापित किया।

दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह

सूरत।

मुमुक्षु खुशबू का जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सूरत के तत्त्वावधान व सेलिब्रिटी ग्रीन के कैंपस में मुनि उदित कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। मुमुक्षु को प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनि उदित कुमार जी ने कहा कि सहजता जीवन का मूलभूत सूत्र है जो सहज रहता है, वह स्वतः स्वस्थ व प्रसन्न हो जाता है।

मुमुक्षु बहन के मन में स्वयं जीवन प्राप्त करने के जो सहज संस्कार प्रस्फुटित हुए हैं, उन्हीं संस्कारों के साथ गुरु दृष्टि के अनुरूप संयम साधना को प्रखर बनाती रहे, यही मंगलकामना करता हूँ।

तेमम की बहनों द्वारा अष्टकम् के मंगल संगान के साथ प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में तेयुप के मंत्री अभिनंदन गादिया, तेमम की अध्यक्षा राखी बैद, सेलिब्रिटी ग्रीन कैंपस के सदस्य शांतिलाल संकलेचा, दीक्षार्थिनी बहन की पारिवारिक सदस्य श्रेया चोरड़िया ने दीक्षार्थिनी बहन के शुभ भविष्य की मंगलकामना की।

तेरापंथी सभा, सूरत के अध्यक्ष नरपत कोचर ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया। दीक्षार्थिनी खुशबू ने अपने वक्तव्य में उपस्थित जनता को तेरापंथ धर्मसंघ की साधु संस्था का सदस्य बनने का संकल्प लेने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन अनुराग कोठारी ने किया।

मुनियों को विदाई देने उमड़ा श्रावकों का हुजूम

विजयनगर।

मुनि रश्मि कमार जी एवं मुनि प्रियांशु कुमार जी को भावपूर्ण विदाई दी। ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर मुनिश्री ने तेरापंथ भवन, विजयनगर से मंगल विहार किया। इस अवसर पर मुनियों को विदाई देने श्रावक-श्राविकाओं का हुजूम उमड़ पड़ा।

परदेशी राजा की कहानी सुनाने के पश्चात मंगल विहार हुआ। मुनि रश्मि कुमार जी ने कहा कि विजयनगर श्रावक समाज ने चातुर्मास के दौरान जिस प्रकार धर्म की आराधना की वह निरंतर बढ़ती रहे। मुनिश्री जी के विहार में विविध धर्म गुरु सम्मिलित हुए। नशामुक्ति रैली के माध्यम से मुनिश्री का विहार प्रारंभ हुआ, जिसमें स्कूल के सैकड़ों बच्चे भी शामिल हुए।

टीपीएफ के विविध कार्यक्रम

टीपीएफ द्वारा ई-कॉमर्स एवं लीगल सेमिनार का आयोजन

बालोतरा।

टीपीएफ के अंतर्गत सिवांची-मालाणी शाखा द्वारा न्यू तेरापंथ भवन में ई-कॉमर्स एवं लीगल सेमिनार (वसीयतनामा) का आयोजन मुनि सुमति कुमार जी, मुनि रजनीश कुमार जी एवं अन्य साधु-संतों के सान्निध्य में किया गया।

ई-कॉमर्स सेमिनार में बैंगलोर के विख्यात प्रवक्ता हिम्मत मांडोत द्वारा श्रोताओं को ऑनलाइन बिजनेस एवं स्टार्टअप्स के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

दूसरे सत्र में मुंबई से सीनियर अधिवक्ता राज सिंघवी द्वारा वसीयतनामा, उसकी आवश्यकता, लाभ आदि पहलुओं पर चर्चा की। आपने वसीयत बनाने की प्रक्रिया को सरलता से समझाते हुए लोगों के प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया।

मुनि सुमति कुमार जी ने विशेष प्रेरणा देते हुए तेरापंथ के प्रोफेशनल्स को समाज की उन्नति के लिए कार्य करने की प्रेरणा दी।

टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीश कुमार जी ने टीपीएफ द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सा (मेडिकल बस) का संचालन, शिक्षा सहयोग योजना, बजट सेमिनार, टीपीएफ परामर्शक योजना, मेडिकल कैंप, कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम सहित अन्य विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी उपस्थित जनसमूह को दी गई।

कार्यक्रम के दौरान टीपीएफ राष्ट्रीय टीम के अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, ट्रस्टी बी०एन० जैन, महामंत्री विमल शाह, कोषाध्यक्ष छवि बैंगानी, निवर्तमान अध्यक्ष नवीन पारख, अन्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य, तेरापंथ सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, अन्य संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सिवांची मालाणी टीम सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

टीपीएफ मंत्री पवन बांठिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। आभार ज्ञापन टीपीएफ सेंट्रल जोन सहमंत्री विशाल पटवारी ने किया। संचालन राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य मनोज चोपड़ा ने किया।

टीपीएफ शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन

औरंगाबाद।

शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी के सान्निध्य में टीपीएफ, औरंगाबाद की नई टीम का शपथ ग्रहण समारोह रखा गया। औरंगाबाद में टीपीएफ यूनिट का प्रथम शपथ ग्रहण समारोह रखा गया।

साध्वी वर्धमानश्री जी ने गीतिका के माध्यम से शपथ लेने वालों को समाज के काम में सदैव सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हमारे तेरापंथ धर्मसंघ में बहुत सारे आयाम हैं, जैसे–तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल व ज्ञानशाला यह सभी गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की देन है, लेकिन टीपीएफ की आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में शुरुआत हुई।

उन्होंने टीपीएफ को सभी संस्थाओं से अभिन्न एवं महत्त्वपूर्ण संस्था के रूप में बताया।

शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी ने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को बधाई एवं संघ के प्रति तन, मन से समर्पित रहने के लिए प्रेरित किया। सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ अंकुर लुणिया ज्वाइंट सेक्रेटरी वेस्ट जोन टीपीएफ के द्वारा दिलाई गई।

उन्होंने सभी नव निर्वाचित पदाधिकारियों को संघ समर्पण एवं नए आइडियाज के साथ काम करने के लिए प्रेरित किया और नए सदस्यों को जोड़ने के लिए सर्व समाज को आह्वान किया।

अंत में उन्होंने टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल द्वारा टीपीएफ, औरंगाबाद टीम के प्रति लिखित बधाई संदेश का वाचन किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कौशिक सुराणा एवं तेयुप के अध्यक्ष विवेक बागरेचा ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ दी।

मुमुक्षु दीक्षार्थिनी खुशबू कोचर का मंगलभावना समारोह

गांधीनगर।

मुमुक्षु दीक्षार्थिनी खुशबू कोचर का मंगलभावना समारोह शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी, शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, गांधीनगर में आयोजित हुआ। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात तेमम द्वारा भिक्षु अष्टकम् संगान से मंगलाचरण किया गया।

साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि वर्तमान युग में भौतिक विकास पराकाष्ठा है, वह सबको लुभावना लग रहा है। परंतु आत्मशुद्धि व आत्म उत्थान के महान लक्ष्य से अभिप्रेरित साधक प्रतिस्त्रोत में चलता है। खुशबू दीक्षार्थिनी का सौभाग्य है कि वह अध्यात्म जगत के महासूर्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के करकमलों से दीक्षित हो रही है। संयम रत्न प्राप्त कर रही है। खुशबू के जीवन का महान विकास होगा।

साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि साधना के क्षेत्र में श्रुत आराधना का तो मूल्य है ही परंतु उससे अधिक मूल्य है विनम्रता, सामंजस्य, समर्पण के साथ गुरु इंगित की आराधना खुशबू हमारा आशीर्वाद है तुम हमारे सजगता से आध्यात्मिक विकास करना। साध्वीवृंद ने गीत का संगान कर आशीर्वाद दिया।

मुमुक्षु खुशबू कोचर ने अपने विचार व्यक्त किए। सभा द्वारा अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

सभा अध्यक्ष कमल सिंह दुगड़ ने स्वागत किया। सभा उपाध्यक्ष रमेश कोठारी ने गीत की प्रस्तुति दी। महासभा से प्रकाश चंद लोढ़ा, तेयुप अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, ट्रस्ट अध्यक्ष प्रकाश बाबेल, महिला मंडल मंत्री सरस्वती बाफना, अणुव्रत समिति मंत्री माणक संचेती, सुभाष डागा, नीता गादिया ने विचार व्यक्त किए। संचालन मंत्री गौतम मांडोत ने किया। आभार सहमंत्री राजेंद्र बैद ने किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह का आयोजन

पाली।

साध्वी पावनप्रभा जी, साध्वी प्रांजलप्रभा जी आदि साध्वियों का मुनि तत्त्व रुचि जी, मुनि सुमति कुमार जी आदि संतों व साध्वी गुप्तिश्री जी साध्वियों से मिलन हुआ।

पाली शहर में समदड़ी की ओर विहाररत साध्वी पावनप्रभा जी, साध्वी प्रांजलप्रभा जी पाली पधारे। इस अवसर पर पाली में विराजित मुनि तत्त्वरुचि जी, बालोतरा की ओर से विहाररत मुनि सुमति कुमार जी आदि व साध्वी गुप्तिप्रभा जी से आध्यात्मिक मिलन हुआ।

जैन धर्म के साधु और साध्वी इन दो तीर्थ के ५ सिंघाड़ों का सौहार्दपूर्ण आध्यात्मिक मिलन देख पाली के विहार सेवारत श्रावक समाज अभिभूत था।

शपथ ग्रहण समारोह

वापी

टीपीएफ, वापी द्वारा नवगठित टीम का 'शपथ ग्रहण समारोह' आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि सुनील चिंडालिया ने अध्यक्ष वीणा बोथरा को शपथ दिलाई। वीणा बोथरा ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए जैन संस्कार विधि से शपथ दिलाई।

कुलदीप कोठारी, विवेक बोथरा, अमित चोपड़ा ने जैन संस्कारक के रूप में अपनी भूमिका निभाते हुए मंगल मंत्रों का उच्चारण किया। टीपीएफ वेस्ट उपाध्यक्ष सुनील चिंडालिया ने नवगठित टीम को बधाई देते हुए टीपीएफ के आयामों की जानकारी दी। इससे पूर्व निवर्तमान अध्यक्ष छाया कोठारी ने अपने विगत कार्यकाल में किए कार्यों का संक्षिप्त में प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

वीणा बोथरा ने सभी का स्वागत करते हुए आगामी कार्यकाल में किए जाने वाले कार्यों की जानकारी संक्षिप्त में प्रस्तुत करते हुए कहा कि आगामी २०-२१ मई, २०२३ को तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ वापी पधारेंगे। इस आयोजन को सफल बनाने हेतु संपूर्ण समाज को जागरूक होकर आगे आना होगा और पूज्यप्रवर की यात्रा को सफल बनाना है।

तेरापंथ महासभा सदस्य रमेश कोठारी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष विजय झाबक, तेयुप अध्यक्ष विजय बोथरा, मंत्री मुकेश बागरेचा, ज्ञानशाला प्रभारी ललित कोठारी, रुचि तलेसरा, प्रिया बड़ाला, अमिता कोठारी, डिंपल कोठारी आदि ने नवगठित टीम के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम में गुलाब चोपड़ा, कालूराम बोहरा, महावीर बोथरा, मनोज धोका आदि समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शिल्पा सांखला ने किया।

मैसूर

टीपीएफ की नई कमेटी का 'शपथ ग्रहण' का आयोजन तथा मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान समारोह तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। पूर्व अध्यक्ष हेमंत पीतलिया ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष नवीन नाहर, उपाध्यक्ष प्रकाश दक, मंत्री राजेश कोठारी, कोषाध्यक्ष अरविंद बच्छावत, कार्यकारिणी सदस्य संजय देरासरिया, डॉ० सिद्धार्थ चावत को पद की शपथ दिलाई।

कोषाध्यक्ष अरविंद बच्छावत ने मेधावी छात्र-छात्राओं का परिचय दिया। इस दौरान कन्हैयालाल देरासरिया, महेंद्र नाहर, मंजु दक, अशोक दक उपस्थित थे। मंच संचालन प्रकाश दक ने किया।

सूरत

टीपीएफ की नव मनोनीत कार्यकारिणी की शपथ विधि का कार्यक्रम मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत टीपीएफ महिला विंग द्वारा की गई। टीपीएफ की पूर्व अध्यक्षा भारती छाजेड़ द्वारा कमेटी सदस्यों का आभार ज्ञापन किया गया। टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल का संदेश राहुल राठौड़ द्वारा वाचन किया गया। आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल-चिकित्सालय के राष्ट्रीय संयोजक लक्ष्मीलाल गांधी द्वारा एटीएम चल-चिकित्सा के बारे में जानकारी प्रदान की और मंगल भावना प्रेषित की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुनील चंडालिया ने नव मनोनीत अध्यक्ष अखिल मारू की घोषणा की। उसके पश्चात अखिल मारू ने अपनी टीम की घोषणा की। मुख्य अतिथि सुनील चंडालिया ने शपथ दिलाई। टीपीएफ समाचार पत्र 'टीपीएफ दर्पण' का विमोचन कैलाश झाबक, प्रबंध संपादक गणपत भंसाली द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पाँच सदस्यों ने टीपीएफ की सदस्यता ग्रहण की। टीपीएफ, सूरत द्वारा आचार्य की गुजरात-महाराष्ट्र के दौरान एटीएम वैन के ७० दिन का संचालन का दायित्व लिया।

टीपीएफ राष्ट्रीय आर्बिट्रेटर कैलाश झाबक, टीपीएफ पूर्व राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी राहुल राठौड़ का सम्मान महासभा के सहमंत्री अनिल चंडालिया, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुनील चंडालिया, टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष भारती छाजेड़, नव मनोनीत अध्यक्ष अखिल मारू द्वारा किया गया।

महासभा के सहमंत्री अनिल चंडालिया ने अध्यक्ष अखिल मारू व उनकी टीम को बधाई प्रेषित की।

मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्बोधन में नई कार्यकारिणी के सफल कार्यकाल का आशीर्वाद दिया। संचालन मंत्री धर्मेन्द्र सेठिया ने किया। कार्यक्रम में लगभग २०० श्रावकों की उपस्थिति रही।

✦ *आदमी को भावशुद्धि रखने का प्रयास करना चाहिए। यही जीवन-विज्ञान की आत्मा है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

अहमदाबाद।

आज की दुनिया में लीडरशीप का बहुत महत्त्व है, भले ही कोई भी फील्ड हो-परिवार हो या व्यापार हो-समाज हो या धर्म हो। नेतृत्व के गुण को आत्मसात करने से व्यकित अपने क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकता है एवं नेतृत्व क्षमता को प्रशिक्षण के माध्यम से सीखकर अपने जीवन को नई दिशा दी जा सकती है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, अहमदाबाद द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में नया आयाम 'Make Your Mark' का आयोजन किया गया।

प्रेक्षा विश्व भारती, कोबा में आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र की मंगल ध्वनि के साथ किया गया। मंगलाचरण तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली एवं जितेंद्र छाजेड़ ने किया।

तेयुप, अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने अपने शब्दों के माध्यम से पधारे हुए राष्ट्रीय सह-प्रभारी अमित गन्ना एवं ट्रेनर अरविंद मांडोत एवं सभी सहभागियों का स्वागत अभिनंदन किया एवं उन्हें कार्यशाला में जुड़ने के लिए शुभकामनाएँ दी। ट्रेनर के रूप में पधारे अरविंद मांडोत का सम्मान व परिचय तेयुप की टीम द्वारा किया गया। राष्ट्रीय प्रभारी अमित गन्ना द्वारा वक्तव्य दिया गया।

ट्रेनर अरविंद मांडोत द्वारा सम्मिलित सौभाग्य को अपने व्यक्तित्व के निखार में लाने के लिए Leadership, Challenges, Goal, Teamwork, Vision, Management, Motivation के गुण बताए गए। प्रथम बार आयोजित कार्यशाला अति रोचक रही। अंत में व्यक्तित्व विकास के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश ने अरविंद मांडोत, राष्ट्रीय सहप्रभारी अमित गन्ना, अहमदाबाद तेयुप अध्यक्ष अरविंद संकलेचा एवं उपाध्यक्ष कपिल पोखरना, सहमंत्री कुलदीप नवलखा, संगठन मंत्री विशाल भरसारिया एवं पूरी टीम का सुंदर आयोजन के लिए बधाई के साथ आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन अहमदाबाद मंत्री दिलीप भंसाली ने किया एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में अहमदाबाद कार्यशाला के संयोजक पंकज धीया, अर्पित मेहता, जितेंद्र छाजेड़, दीपक बच्छावत, अरुण डोसी और वैभव कोठारी का विशेष श्रम रहा।

'ऑर्फनेज ड्राइव' का आयोजन

दक्षिण मुंबई।

तेयुप, दक्षिण मुंबई के मार्गदर्शन से तेरापंथ किशोर मंडल ने महालक्ष्मी-मुंबई में वात्सल्य अनाथालय में 'ऑर्फनेज ड्राइव' का आयोजन किया। किशोरों ने बच्चों के साथ खेल खेले, कई गतिविधियाँ कीं, एक नृत्य कार्यशाला आयोजित की। उनके साथ बहुत सारी बातें की, उन्हें नाश्ता, नोटबुक, स्टडी किट आदि दिए। बिना किसी चिंता के जिंदगी के प्रति इन बच्चों का स्नेह देखकर हृदय भर आया। किशोरों द्वारा इन बच्चों को खुशियाँ बाँटने का यह एक छोटा-सा कदम था।

किशोर मंडल, दक्षिण मुंबई से तन्मय जवेरी, हर्ष सिंघवी, दिशांत ढेलरिया की उपस्थिति रही। सह-संयोजक दर्शन डागलिया ने कार्यक्रम की जानकारी दी।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेयुप द्वारा अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। परिषद अध्यक्ष ने कहा कि एटीडीसी पूर्वांचल के लिए यह गौरव का विषय है कि डॉ० धीरज करोठी जैसे चिकित्सक हमसे जुड़े हुए हैं। डॉ० मरोठी की निर्देशन में एक बार फिर अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल-कोलकाता में किया गया। कुल १२ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया।

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा डॉ० धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रेषित किया गया।

नि:शुल्क चक्षु परीक्षण, चश्मा वितरण एवं मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप द्वारा निर्देशित आयाम सेवा-संस्कार-संगठन को पूर्ण साकार करते हुए तेयुप ने सेवा के अंतर्गत लायंस क्लब और खुशियाँ फाउंडेशन के साथ मिलकर, आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में १७२ जरूरतमंद लोगों का नि:शुल्क चक्षु परीक्षण किया, जिसमें से १०२ लोगों को मुफ्त चश्मा वितरण और १४ लोगों का मुफ्त मोतियाबिंद ऑपरेशन किया जाएगा।

कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्ष एवं एटीडीसी सलाहकार नरेंद्र छाजेड़, निवर्तमान मंत्री धीरज मालू, परामर्शक कन्हैयालाल कोठारी, अध्यक्ष राजीव जैन, मंत्री हेमंत बैद, एटीडीसी के प्रभारी व कार्यकारिणी सदस्य रोहित धाड़ेवा, सह-प्रभारी नीरज बैंगानी, संदीप जैन, अरविंद गोटानी एवं विशेष आमंत्रित सदस्य संदीप सिंघी की विशेष उपस्थिति रही।

एटीडीसी ट्रस्टी और कार्यक्रम के प्रायोजक झूमरमल नाहटा, संजय नाहटा ने पधारकर शिविर का जायजा लिया और इसे आगे भी सहयोग जारी रखने और निरंतर शिविर करने के लिए प्रोत्साहित किया। नाहटा परिवार को साधुवाद।

The Power of Affirmations कार्यशाला का आयोजन

धुबड़ी।

समणी मधुरप्रज्ञा जी अपनी सहयोगिनी समणी शुभप्रज्ञा जी एवं समणी मननप्रज्ञा जी के साथ धुबड़ी शहर में पधारी। आपके पदार्पण से यहाँ के भाई-बहनों में धर्म के प्रति उत्साह जागृत हुआ तथा सभी ने प्रवचन का लाभ लिया। निर्देशित समणी मधुरप्रज्ञा जी ने अपने प्रातःकालीन प्रवचनों में अनेक बिंदुओं को छुआ, हमारी सम्यक् दृष्टि कैसे जागृत हो, श्रावकों के क्या कर्तव्य हैं, कैसे जागे हमारे मन में संघ और संघपति के प्रति आस्था तथा देव, गुरु एवं धर्म का बहुत ही सरल, सरस शब्दों में विवेचन किया।

निर्देशित समणी मधुरप्रज्ञा जी के सान्निध्य में महिला मंडल की बहनों द्वारा 'The Power of Affirmations की कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से हुआ। समणी शुभप्रज्ञा जी ने कहा कि जीवन के साथ यदि जीने की कला जुड़ जाए तो व्यक्ति शांतिमय जीवन जी सकता है। इसके लिए जरूरी है—सकारात्मक सोच, वाणी में माधुर्य एवं जीवन में धैर्य। निर्देशिका समणी मधुरप्रज्ञा जी ने कहा कि वह व्यक्ति अमीर बन सकता है, जिसके भीतर दृढ़-संकल्प शक्ति होती है। संकल्पशक्ति यदि मजबूत है तो बड़े से बड़ा काम किया जा सकता है। संकल्प के साथ व्यक्ति अपने भीतर हमेशा Affirmations के माध्यम से नकारात्मक विचारों को काबू करे और दृढ़-विश्वास के साथ सकारात्मक विचारों पर अपने कदम बढ़ाते जाएँ तो अपने लक्ष्य तक पहुँचने में देर नहीं लगेगी। जरूरत है अपने विचारों को अवचेतन मन तक प्रभावित करें। जिससे व्यक्ति अपने लक्षित मंजिल तक पहुँच सके।

समणी मननप्रज्ञा जी की प्रेरणा से यहाँ की कन्या मंडल में जागृति आई। समणीजी के सान्निध्य में कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने 'पर्यावरण' पर बहुत ही सुंदर एवं रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ कांता जैन के मंगलाचरण से हुआ। ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने गीत की प्रस्तुति दी। शिल्पा सेठिया ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन नीलम बुच्चा ने किया तथा महिला मंडल की बहनों द्वारा कार्यक्रम में भाग लेने वालों को प्रोत्साहित किया गया।

गलत का खंडन करो, सही का मंडल...

(पृष्ठ ११ का शेष)

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हम आचार्य भिक्षु से संबद्ध और उनके तप व महाप्रयाण से आबद्ध सिरियारी में स्थित है। आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा विशिष्ट है। कितने गीत उन पर गाए गए हैं। धम्म जागरणा से भी भक्ति-स्तुति का माहौल बनता है। भक्ति अहंकार पर चोट पहुँचाने वाली बन सकती है। सिरियारी एक भक्ति योग का प्रांगण है।

अभी तो सिरियारी में छोटे से अंश में वर्धमान महोत्सव का-सा रूप हो गया। साधु-साध्वियों, समणियों व श्रावकों की संख्या भी बढ़ गई। 'ज्योति का अवतार बाबा ज्योति ले आया'। जैन संप्रदाय में और आचार्य हैं क्या जिनकी समानता भगवान महावीर से हुई हो। आचार्य भिक्षु की कई प्रसंगों में समानता हुई है। आज सिरियारी में तीसरे दिन का अंतिम प्रवास है। इतनी चारित्रात्माओं और बड़े सात संतों से मिलना हो गया। जो कुछ दुर्लभ है। साक्षात वंदन करने का मौका मिला है। दर्शन हुए हैं।

मुनि अनिकेत कुमार की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर ने मुनि अनिकेत कुमार जी का परिचय दिया। पूरा परिवार संघ में सम्मिलित हो चुका था। यह एक विशेष घटना है। मुनि कौशल भी खूब विकास करे। सिद्धार्थप्रभा भी खूब विकास करे। धैर्यप्रभा व तेजस्वीप्रभा भी खूब अच्छा विकास करे। सभी शांति-समता रखें। पूज्यप्रवर ने मुनि अनिकेत जी के प्रति मध्यस्थ भावना से चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, साध्वी सिद्धार्थप्रभा जी, मुनि कौशल कुमार जी, मुनि रणजीत कुमार जी, मुनि कुमार श्रमण जी ने अपनी श्रद्धांजलि भावों से अर्पित की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि पूरे परिवार के पाँच व्यक्तियों का दीक्षित होना और कोई उदाहरण है क्या? यह एक शोध का विषय है। वर्तमान में तो लगभग नहीं है। हम स्वामी जी से जुड़े स्थान में मुनि अनिकेत कुमार जी के प्रति मंगलभावना करते हैं, उनकी आत्मा अंतिम मंजिल तक विकास करती रहे।

रमेश बोहरा ने न्यातिलों एवं मुसालिया की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। मुनि चैतन्यकुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी ने गीत से पूज्यप्रवर की अभिवंदना की। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने भी मुनि अनिकेत कुमार जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अभिव्यक्त की।

जीवन को धर्म की कमाई करने में...

(पृष्ठ १२ का शेष)

धर्म का कहना है—इस मानव जीवन का उपयोग करो। गृहस्थ को धन चाहिए तो धर्म भी चाहिए। आपका धन साथ जाने वाला नहीं है, धर्म का प्रभाव आगे तक जा सकता है। यह चिंतन करना चाहिए कि मेरे साथ क्या जाएगा।

मृत्यु तो अवश्यंभावी है, पर साथ में जो जा सके वो चीज मैं तैयार कर लूँ। सच्चा धन धर्म है, जो आगे भी काम आ सकेगा। आदमी धर्म का टिफिन तैयार करने का प्रयास करे। हम लोग आज धामली आए हैं। धामली की जनता में धर्म की चेतना पुष्ट रहे। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति—ये कोमन धर्म की बातें हैं। जैन-अजैन कोई हो। ये छोटे-छोटे संकल्प जीवन में आ जाएँ तो इस जीवन के बाद का जीवन भी अच्छा रह सके। इसलिए धर्म का आचरण करना चाहिए। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम जीवन में आ जाएँ। प्रेक्षाध्यान से भीतर की चेतना जागे। हमारे राग-द्वेष कमजोर पड़ें। मनुष्य जीवन बड़ा कीमती है। धर्म का तत्त्व साथ में जा सकता है। जीवन को अच्छा रखने का प्रयास करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में सकल जैन संघ को महावीर कटारिया, महिला मंडल ने गीत, पुष्पा कटारिया, मूर्तिपूजक संघ से कांतिलाल कटारिया, उमेश चोधरी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महामना भिक्षु की जन्म भूमि पर तेरापंथ के वर्तमान भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी का पावन पदार्पण

आत्म पवित्रता की दृष्टि से सरलता का विशेष महत्त्व होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

कंटालिया, ६ दिसंबर, २०२२

तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु की पावन जन्म स्थली कंटालिया, जहाँ माता दीपां की कुक्षी से आचार्य भिक्षु का बालक भिक्षु के रूप में वि०सं० १७८३ आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को अवतरण हुआ था। भिक्षु के परंपर पट्टधर तेरापंथ के एकादशम महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः सोजत रोड से १४ किलोमीटर का विहार कर मुसालिया की धरा को पावन करते हुए कंटालिया पधारे।

अपने परम आराध्य आचार्यश्री भिक्षु की स्मृति करते हुए महामनीषी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्म पवित्रता की दृष्टि से सरलता का बहुत महत्त्व है। ऋजुता होती है, तो शुद्धता हो सकती है। जहाँ छल-कपट, दाँव-पेच का जाल होता है, वहाँ शुद्धता में कमी रह सकती है।

शास्त्रकार ने कहा है कि हिंसा न हो और मृषा न बोलें। हिंसक या मृषा वचन आदमी को और विशेषतया साधु को नहीं बोलना चाहिए। झूठ बोलने के पीछे दो कारण बताए गए हैं—क्रोध और भय। जिस व्यक्ति में गुरुत्व का आकर्षण होता है, वहाँ भी जनता आकर्षित हो सकती है।

आचार्य भिक्षु जैन श्वेतांबर तेरापंथ के प्रथम अनुशास्ता-जनक थे। उनकी अपनी महिमा थी। उनमें ज्ञान भी अच्छा था। बुद्धि का वैशिष्ट्य था। आचार निष्ठा का विशेष भाव था। आदमी में बुद्धि और प्रतिभा होती है, तो वह अच्छा प्रतिपादन कर सकता है। अपनी बात को गले उतारने का सत् प्रयास कर सकता है। सही बात को गले उतारने का प्रयास हो।

कंटालिया आचार्य भिक्षु के जन्म प्रसंग से जुड़ा हुआ है। 'भिक्षु म्हारे प्रगट्या जी भरत खेतर में।' स्वामीजी थांरी आ अमाप्य ऊँचाई।' ज्योति का अवतार बाबा ज्योति ले आया।' परमपूज्य जयाचार्य, गुरुदेव तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित गीतों का एक-एक पद्य का सुमधुर संगान पूज्यप्रवर ने किया। स्वरचित गीत 'भिक्षु बाबा लो हमारी वंदना' का भी संगान किया।

कुछ समय पश्चात् आचार्य भिक्षु त्रि-शताब्दी जन्म महोत्सव भी प्रारंभ होने वाला है। वि०सं० २०८२ आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी से वह जन्म त्रिशताब्दी वर्ष का अवसर प्रारंभ होने वाला है। काल का अपना महत्त्व है, तो क्षेत्र का भी अपना महत्त्व मानना चाहिए। इसका प्रारंभ कंटालिया से ही करना चाहता हूँ। कल ही उसकी स्थापना करना चाहता हूँ। सूर्योदय के साथ प्रातः ७ बजकर २१ मिनट पर कल प्रतिष्ठित करने का विचार है।

परम पावन ने महती कृपा करते हुए फरमाया कि २०२६ में खाटू से पहले कंटालिया आने का भाव है। कंटालिया में तेरह रात्रि रहने का और त्रिशताब्दी का महाचरण यहाँ मनाने का भाव है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आचार्यप्रवर में गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत प्रकट हो रहा है। जहाँ पधारते हैं, जन सैलाब उमड़ पड़ता है। एक महासूर्य से अनुभूति होती है। आचार्य भिक्षु के प्रति भी लोगों का आकर्षण बना हुआ था। अनेक लोगों को आचार्य भिक्षु ने तृप्त किया था। ठाकुर मोखमसिंह जी के प्रसंग से यह समझाया।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में आचार्य भिक्षु जन्म स्थली समिति से गौतमचंद सेठिया, तेमम, नवरत्नमल गादिया, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, सरपंच पारस बलवान ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। रमेश डागा ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। मुनि रणजीत कुमार जी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

गलत का खंडन करो, सही का मंडन करो : आचार्यश्री महाश्रमण

सिरियारी, ६ दिसंबर, २०२२

भैक्षव शासन के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी का सिरियारी में तीसरे दिन का प्रवास। महातपस्वी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी को वर्तमान पर भी ध्यान देना चाहिए और वर्तमान में भविष्य के संदर्भ में यथोचित्य ध्यान देना चाहिए।

तीन काल हैं—अतीत, वर्तमान और भविष्य। इन तीनों में सारा काल समाहित हो जाता है। सबसे छोटा वर्तमान होता है। अतीत और भविष्य अनंत विशाल है। भविष्य पर हम ध्यान दें और अतीत से प्रेरणा ली जा सकती है। परम पूज्य भिक्षु स्वामी हमारे प्रेरणा के स्रोत हो सकते हैं। वे अतीत के व्यक्तित्व हैं। दसों आचार्य अतीत में हुए हैं।

यह सिरियारी आचार्य भिक्षु से जुड़ा स्थान। यह भिक्षुमय वातावरण हो सकता है। आचार्य भिक्षु हमारे धर्मसंघ के आद्य आचार्य गुरुदेव हैं। उनका अपना वाङ्मय है। उनका साहित्य सिद्धांतपरक है, जिसमें तत्त्वज्ञान की बातें हैं। साहित्य आख्यानपरक भी है। आख्यान के द्वारा सिद्धांत की बात को रोचक आकार भी दिया जा सकता है। समझाने-समझने में सुविधा हो सकती है। आचार्य भिक्षु प्रसंगों से, बातों को समझाते थे।

जिसके गले जिस तरीके से उतर सके उस तरीके को काम में लिया जा सकता है। मूल बात समझ में आनी चाहिए। दान-दया, तत्त्व ज्ञान व मिथ्यात्व की करनी के संदर्भ में उनका मंतव्य है। उनके साहित्य में हमें खंडन की बात भी मिलती है। कहीं-कहीं खंडन भी आवश्यक और उपयोगी हो सकता है। गलत का खंडन करो, सही का मंडन करो।

आग्रही-दुराग्रही उसकी युक्ति को वहाँ लागू करना चाहता है, जहाँ उसकी मान्यता है। आग्रहरहित आदमी है, वो अपनी गति से वहाँ ले जाएगा जहाँ युक्ति संगत बात होती है। आग्रह रहित मनरूपी बछड़ा युक्तिरूपी गाय के पीछे चलता है। आदमी न्याय संगत बात पर ध्यान दे। आग्रहहीन गहन चिंतन का द्वार हमेशा खुला रहे।

आचार्य भिक्षु के हम जीवन को पढ़ें। उनमें प्रतिभा, बुद्धि कौशल विशिष्ट था। उनका आचार पक्ष भी सम्यक् था। यह यथार्थ का आकाश है, उसमें उड़ान भरनी है तो यथार्थ के प्रति श्रद्धा-अनाग्रह व तत्त्व ज्ञान का पराक्रम भी हो। यथार्थ में उड़ने वाला व्यक्ति महान बन सकता है।

न्याय के क्षेत्र में सब एक समान हैं। न्याय तभी हो सकता है जब न्याय के आसन पर बैठने वाला व्यक्ति प्रलोभन में न जाए, भयभीत न हो, उसका अपना विवेक हो। हमारी दुनिया में यथार्थ की खोज करने वाले अनाग्रही और निष्पक्ष होते हैं। बुद्धि भी अच्छी हो तो यथार्थ को निचौड़ के रूप में प्रकट कर सकते हैं। बहुत ऊँची बात है कि महावीर से मेरा मोह नहीं और कपिल आदि से द्वेष नहीं, जो यथार्थ है, वो प्रकट करे। आचार्य भिक्षु ने तो महावीर को भी चूका कह दिया। मारण सिद्धांत को यथार्थ बताना था।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने पूज्यप्रवर द्वारा रचित गीत 'बाबा भिक्षु स्वामी की शुभ स्तवना करते हैं' का सुमधुर संगान किया।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 - 25 दिसंबर, 2022

✦ *समता की साधना के द्वारा आधि और उपाधि से मुक्त हुआ जा सकता है तथा उससे व्याधि की जड़ें भी निर्मूल हो सकती हैं।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल पर आचार्यश्री महाश्रमण जी का पावन पदार्पण

जिनका मन धर्म में रमा रहता है उन्हें देवता भी करते हैं नमस्कार : आचार्यश्री महाश्रमण

सिरियारी, ७ दिसंबर, २०२२

आचार्यश्री भिक्षु का महाप्रयाण स्थल सिरियारी। वर्तमान के भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः १४ किलोमीटर का विहार कर कंटालिया में भिक्षु त्रिशताब्दी जन्म महोत्सव का शुभारंभ कर सिरियारी पधारे। सिरियारी में तीन दिवस का पूज्यप्रवर का प्रवास है, कल दीक्षा महोत्सव भी आयोजित है।

आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि दुनिया में मंगल का महत्त्व है। कभी मंगलभावना समारोह आयोजित होता है। दीक्षार्थियों का भी मंगलभावना समारोह होता है। चातुर्मास संपन्नता से पूर्व और अनेक अवसरों पर मंगलभावना समारोह आयोजित होते हैं।

दूसरों के लिए मंगलकामना करना विशेष बात हो जाती है। यह एक गुणवत्ता की बात है। जो आदमी दूसरों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना रखता है, वो खुद का मंगल करता है। दुःख भोगने वाला तो कभी सुखी बन सकता है, पर दूसरों को दुःख देने वाला है, वह खुद दुखी बन सकता है।

गृहस्थ चारित्रात्माओं से मंगलपाठ सुनते हैं। धर्म के जगत में अर्हतों, सिद्धों, साधुओं को और केवली प्रज्ञप्त धर्म को मंगल कहा गया है। ये सब धर्म के आधार पर ही मंगल कहे जाते हैं। धर्म उत्कृष्ट मंगल है। सामान्य मंगलों में आदमी कुछ

पदार्थों का उपयोग कर लेता है। अच्छा मुहूर्त दिखा लेता है। पर धर्म के सामने ये मंगल छोटे हो जाते हैं।

अहिंसा, संयम और तप धर्म है। जिसका मन धर्म में रमा रहता है, उसको देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म की साधना करने वाले खुद धर्म ही बन जाते हैं। धर्म और धर्मी एक संदर्भ में एक ही होता है।

आज हम सिरियारी आए हैं। एक दशक से कुछ अधिक समय हो गया है। अगली बार जल्दी आने की इच्छा है। सिरियारी आचार्य भिक्षु से जुड़ा प्रांगण है।

चातुर्मास भूमि, कर्मभूमि, अनशन भूमि और महाप्रयाण भूमि सिरियारी है। वि०सं० २०६० आचार्य भिक्षु महाप्रयाण द्विशताब्दी समारोह पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने यहाँ चातुर्मास भी किया था।

मैं समाधि स्थल पर भी जाकर आया था। आचार्य भिक्षु त्रि-शताब्दी जन्म समारोह कुछ समय पश्चात् आने वाला है। क्षेत्रतः तो मैंने उसकी आज प्रातः ही घोषणा कर दी थी। आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के जनक थे। सिरियारी संस्थान भी विकास कर रहा है। पर्याय परिवर्तन हो रहा है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी, मुख्य मुनि महावीर कुमार जी व साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी आज आए हैं। शासनश्री मुनि हर्षलाल जी, मुनि मणीलाल जी के दर्शन हुए हैं।

मुनि सुव्रतकुमार जी, मुनि संजय कुमार जी के दर्शन आज मिले हैं। शासनश्री रवीन्द्रकुमार जी तो सामने आ गए थे। अनेक रत्नाधिक मुनियों के मैं साथ में हूँ। अनेक साध्वियों का भी आना हुआ है।

सिरियारी हमारे धर्मसंघ का महत्त्वपूर्ण स्थान बन गया है। आज चतुर्दशी है। पूज्यप्रवर ने हाजरी-मर्यादा का वाचन किया। हमारी चर्या, आचार, सिद्धांत और मर्यादाएँ हैं, हम इनके प्रति जागरूक रहें। सभी संत अच्छा काम करते रहें, साधना करते रहें। इतनों से आज मिलना हुआ है। सुरेंद्र सुराणा ने भी सिरियारी संस्थान को सहयोग दिया है। वे भी आध्यात्मिक साधना करते रहें। उनके मन को चित्त समाधि रहे। चारित्रात्माओं ने लेख-पत्र का वाचन किया।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के संयोजक निर्मल श्रीश्रीमाल, सिरियारी तेरापंथ समाज व बेटियों ने गीत, सभाध्यक्ष नवीन छाजेड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के दर्शन करने वाले बहिर्विहारी साधु-साध्वियों की ओर से मुनि रणजीत कुमार जी, साध्वी विशद्प्रभा जी, साध्वी परमयशा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

आचार्य भिक्षु समाधि संस्थान स्थल के कैलेंडर एवं जैविभा द्वारा प्रकाशित तृतीय आचार्यश्री भारमल जी के जीवन-वृत्त पर आधारित पुस्तक का पूज्यप्रवर के करकमलों से लोकार्पण हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मुनि अनिकेत कुमार जी का देवलोकगमन

सिरियारी।

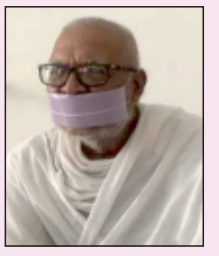

मुनि अनिकेत कुमार जी गुरुदर्शनार्थ सिरियारी की ओर विहार कर रहे थे। ३० नवंबर, २०२२ को १६ किलोमीटर का विहार कर स्थान पर पहुँचे। वहाँ उनका देवलोकगमन हो गया।

मुनि अनिकेत कुमार जी का जन्म ११ सितंबर, १९६० को चेन्नई में हुआ। मुनिश्री के पिता का नाम स्व० मोहनलाल बोहरा एवं माताश्री का नाम स्व० लक्ष्मीबाई बोहरा था।

छोटी उम्र में ही वे व्यापार आदि में लग गए। बचपन से ही वे पुरुषार्थी व ईमानदार थे। छब्बीस साल की उम्र में उनकी शादी बालुन्दा निवासी, चेन्नई प्रवासी स्व० संपतराज छल्लाणी की पुत्री पुष्पलता छल्लाणी से हुआ। दोनों परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार थे। उनकी धर्मपत्नी ने भी उनका जीवन के अनेक प्रसंगों में साथ निभाया यहाँ तक संयम ग्रहण भी साथ ही किया।

सन् २०१८ में आचार्यप्रवर के चेन्नई चातुर्मास में उन्होंने अपने परिवार सहित (स्वयं – मुनि अनिकेत कुमार, धर्मपत्नी साध्वी धैर्यप्रभा, पुत्र-मुनि कौशल कुमार, पुत्री-साध्वी तेजस्वी प्रभा) दीक्षा ग्रहण की। उनकी एक पुत्री (साध्वी सिद्धार्थप्रभा जी) पहले से ही संघ में साधनारत हैं।

आचार्यप्रवर ने दीक्षा के बाद उन्हें और मुनि कौशल कुमार जी को मुनि रणजीत कुमार जी के सिंघाड़े में नियोजित किया। बर्हिविहार में जाते समय आचार्यप्रवर ने उन्हें स्वाध्याय, सेवा, सौहार्द में तल्लीन रहने की शिक्षा प्रदान की। गत चार सालों में उन्होंने दसवेंकालिक, उत्तराध्ययन, आगम आदि कंठस्थ किए। तेला, अठाई, मौन, मासखमण आदि तपस्या की। वे प्रायः स्वाध्याय, मौन, जप आदि में लीन रहते थे। मुनिश्री स्वावलंबी, व्यवहारकुशल, अनुशासनप्रिय व व्यवस्थित जीवन रहने वाले थे। लोगों से बोलने, सीखने आदि में रुचि रखते थे। इस स्वल्प अवधि में उन्होंने सैकड़ों दिलों को स्पर्श किया। आचार्यप्रवर ने उनके संसारपक्षीय पुत्र मुनि कौशल कुमार जी को उनके साथ रखा।

वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ में पिता पुत्र की यह एकमात्र जोड़ी थी। वह नहीं रही। स्मृति सभा में आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इतिहास में खोजकर बताएँ, इस प्रकार पिता-पुत्र, दो पुत्रियाँ व पत्नी सहित अपने संघ में दीक्षा कभी हुई है, क्या?

जीवन को धर्म की कमाई करने में नियोजित करें : आचार्यश्री महाश्रमण

धामली, १२ दिसंबर, २०२२

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः लगभग १७ किलोमीटर का प्रलंब विहार कर धामली पधारे। पूज्यप्रवर ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में चौरासी लाख जीव योनियाँ बताई गई हैं। इन विभिन्न योनियों में मनुष्य की योनि बहुत महत्त्वपूर्ण और दुर्लभ है।

इस मानव जीवन को ऐसे ही पापों में, भोगों में गँवाता है या इस जीवन का आत्म-उत्थान, आत्म-कल्याण की साधना में उपयोग करता है। पाप-भोगों में ही यह जीवन चला गया तो फिर मानव जीवन कब मिलेगा क्या पता? इसे थोड़े से लाभ, भौतिक सुखों में गँवाना नहीं चाहिए। आत्मा का कल्याण हो, उसके लिए भी प्रयास करना चाहिए। धर्म की साधना करनी चाहिए, यह एक प्रसंग से समझाया।

(शेष पृष्ठ १० पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**